ओ३म्
वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र
शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये
वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-16 24 से 30 सितम्बर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

आकर्षक व्यक्तित्व, ओजस्वी वक्ता, जुझारू सामाजिक कार्यकर्ता तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी चिर निद्रा में हुए लीन

स्वामी अग्निवेश जी का पार्थिव शरीर पंचतत्त्व में हुआ विलीन

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के अन्तिम दर्शनार्थ पहुँचे गणमान्य महानुभाव

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी 'सांसद', स्वामी यतीश्वरानन्द जी 'विधायक', रामपाल शास्त्री जी, व गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी गण

पूर्व केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, श्री राम मोहन राय

विभिन्न मतों के आचार्यगण

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता एवं प्रतिनिधिगण सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के साथ

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी चिर निद्रा में हुए लीन

विलक्षण प्रतिभा के धनी, जुझारू व्यक्तित्व, सिद्धहस्त लेखक, महर्षि दयानन्द की वैचारिक विरासत को आत्मसात करने वाले वेदों के विद्वान्, दबे–कुचले अन्तिम व्यक्ति की लड़ाई लड़ने वाले, हजारों बंधुआ मजदूरों के त्राणदाता, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी का 11 सितम्बर, 2020 को सायं 6.30 बजे निधन हो गया। वे 81 वर्ष के थे। स्वामी जी पिछले कई माह से लिवर में विकार आ जाने के कारण अस्वस्थ चल रहे थे। प्रसिद्ध आई.एल.बी.एस. अस्पताल में विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में उनका उपचार चल रहा था। लेकिन परमात्मा की इच्छा के आगे मानव विवश हो जाता है और स्वामी जी हम सबको छोड़कर परमात्मा की ममतामयी गोद में आसीन हो गये।

दिनांक 12 सितम्बर, 2020 को उनके पार्थिव शरीर को 7, जन्तर–मन्तर स्थित उनके कार्यालय में दर्शनार्थ रखा गया। जहाँ स्वामी अग्निवेश जी के परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में उनके प्रशंसकों, अनुयायियों, राजनेताओं तथा विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने उनके अन्तिम दर्शन किये और स्वामी जी को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। दिल्ली ही नहीं उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखण्ड आदि प्रदेशों से भारी संख्या में आर्यजन उनके अन्तिम दर्शन के लिए पहुँचे। मध्यान्ह 2 बजे उनके पार्थिव शरीर को अन्तिम संस्कार हेतु उन्हीं के द्वारा स्थापित गुरुग्राम के बहलपा स्थित अग्नियोग आश्रम में ले जाया गया। बहलपा स्थित अग्नियोग आश्रम में सायं 4 बजे उनका अन्तिम संस्कार अश्रुपूरित सैकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। अन्तिम संस्कार प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, श्री यशपाल शास्त्री जी तथा गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य श्री रामपाल शास्त्री जी के निर्देशन में सम्पन्न किया गया। गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी साथ–साथ में मन्त्र पाठ करते रहे। मुखाग्नि स्वामी अग्निवेश जी के परमसहयोगी तथा शिष्य स्वामी आर्यवेश जी ने दी। सैकड़ों की संख्या में उपस्थित उनके प्रशंसकों तथा अनुयायियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से अपने प्रिय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह, सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, सर्वधर्म संसद के स्वामी सुशील जी महाराज, स्वामी रामवेश जी, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी विजयवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी वेदात्मवेश जी, साध्वी अग्न्यानन्दी, स्वामी देवेश्वरानन्द जी, आचार्य अखिलेश जी, आर्च विशप श्री अनिल कुट्टू, श्री परमजीत सिंह चण्डोक गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, दिल्ली, सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री आर. एस. तोमर जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, श्री योगेन्द्र यादव अध्यक्ष स्वराज इंडिया पार्टी, श्री रामसिंह एवं श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री प्रदीप आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या तथा उनकी पूरी टीम, श्री हवा सिंह हुड्डा, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री अजय सहगल, श्री बलजीत आदित्य, सलीम इंजीनियर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जमाते इस्लामी, डॉ. अली मर्चेन्ट लोटस टेम्पल, श्री भंवर लाल आर्य तथा आर्य वीरदल जोधपुर की पूरी टीम, श्री ओम सपरा, साध्वी पुष्पा शास्त्री, श्री महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री राम कुमार सिंह, डॉ. मुमुक्षु आर्य, आचार्य विजय पाल, गुरुकुल झज्जर, आचार्य राजेन्द्र गुरुकुल कालवा, आचार्य हनुमन्त प्रसाद, श्री विरजानन्द देवकरणी, श्री मनु सिंह देहरादून, भजनोपदेशिका कल्याणी आर्या सहित हजारों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वामी अग्निवेश जी का समस्त जीवन सामाजिक न्याय, आर्थिक एवं सामाजिक समानता के सक्रिय साधक के रूप में बीता जो पिछले 50 वर्षों से अधिक समय से मानव अधिकार एवं सामाजिक न्याय के अभियानों के अंग रहे। स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मात्र में भ्रातृभाव जगाने तथा सामाजिक समता को विकसित करने में लगा दिया। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, आर्थिक शोषण, धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, जातिवाद, साम्प्रदायिकता जैसे मुद्दों को उठाकर जन–जागरण पैदा किया। ये वे मुद्दे थे जो राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे थे। स्वामी जी ने कन्या भ्रूण हत्या का मुद्दा उठाया जो आज सारे देश में जागृति पैदा कर रहा है। स्वामी अग्निवेश जी ने अपने अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय कार्यों के माध्यम से विश्व मंच में अपनी प्रतिभा तथा कार्यों का लोहा मनवाया था। वहाँ उन्हें शान्ति तथा स्वतंत्रता के उद्वाहक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वर्तमान में वे अनेकों पदों को सुशोभित कर रहे थे। समकालीन दासता विरोधी ट्रस्ट फण्ड के अध्यक्ष, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, अध्यात्म जागरण मंच के संयोजक, निवानो शांति पुरस्कार समिति टोकियो के सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय शांति परिषद् के सदस्य, धर्म प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के अध्यक्ष सहित अनेकों संगठनों तथा संस्थाओं का वे कुशल संचालन कर रहे थे। स्वामी जी वेद आधारित जीवन मूल्यों समानता, सत्य, प्रेम, न्याय, सहनशीलता आदि की पुनर्स्थापना के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहे। स्वामी

चिता को मुखाग्नि देते हुए स्वामी आर्यवेश जी

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी चिर निद्रा में हुए लीन

अग्निवेश जी धर्म, अध्यात्म, मानवता, समाज व राष्ट्र की अस्मिता और उसकी गरिमा को बचाने तथा बढ़ाने में हमेशा मुखर रहे। स्वामी अग्निवेश जी ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से विश्वभर में ख्याति अर्जित की। उन्होंने दिल्ली–देवराला सती प्रथा विरोधी पद यात्रा निकाली, नाथद्वारा में हरिजनों के मंदिर प्रवेश का आन्दोलन चलाया, पुरा महादेव में शंकराचार्य को आचार्या सावित्री देवी से शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। 1983 में दिल्ली के रामलीला मैदान में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी का ऐतिहासिक आयोजन किया। दिल्ली में ही ताल कटोरा स्टेडियम में तीन दिन का आर्य महासम्मेलन आयोजित किया, दिल्ली के ही हिन्दी भवन में दो दिन का आर्य सम्मेलन रखा तथा दूरदर्शन द्वारा अश्लील प्रोग्राम देने के विरुद्ध आन्दोलन किया। विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार किया। कुम्भ मेलों के अवसरों पर हरिद्वार में वेद प्रचार शिविर लगाकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरण तथा आर्य समाज के मन्तव्यों का प्रचार–प्रसार किया। पाखण्ड विरोधी आन्दोलन, हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन चलाया, दिल्ली में शराबबन्दी आन्दोलन आयोजित किया, कन्या भ्रूण हत्या विरोधी 'सर्वधर्म जनचेतना यात्रा' सहित ऐसे अनेकों प्रशंसनीय कार्य हैं जो आर्य समाज में संघर्ष के प्रतीक बनकर उभरे तथा स्वामी अग्निवेश जी की आन्दोलनात्मक छवि को प्रस्तुत कर नई दिशा देने का प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने एक ऐसी वैचारिक क्रांति पैदा कर दी जिसके कारण देश तथा विदेश में उनका कद अत्यन्त विशालता को प्राप्त हुआ जिसके कारण वे देश में ही नहीं विदेश में भी समान रूप से सक्रिय तथा सम्मानित हुए। अनेक देशी तथा विदेशी संस्थाओं द्वारा उनका अभिनन्दन किया गया तथा सम्मान प्रदान किया गया। विशेष रूप से उन्हें वर्ष 2004 में 'राईट टू लाईविली हुड अवार्ड' तथा 2004 में ही 'राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त समय–समय पर अनेकों अन्य पुरस्कारों से स्वामी अग्निवेश जी विभूषित हुए। उनकी मेधा, प्रज्ञा तथा अनुभव एवं उन जैसा तेजस्वी, वर्चस्वी और मनस्वी प्रतिभा का एक साथ दर्शन बहुत कम देखने को मिलता है। स्वामी अग्निवेश जी वर्चस्वी तथा ओजस्वी प्रवक्ता, सिद्ध हस्त लेखक व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता थे। हरियाणा के पुण्डरी से विधायक चुने गये तथा हरियाणा में शिक्षामंत्री का गौरवपूर्ण पद भी उन्होंने प्राप्त किया। स्वामी जी के ऊपर कई बार स्वार्थी तत्वों ने प्राणघातक हमला भी किया लेकिन वे अपने कार्यों से कभी विचलित नहीं हुए।

सन् 1968 में जब प्रो. श्यामराव (पूर्व नाम) की प्रथम भेंट ब्रह्मचारी इन्द्रदेव मेधार्थी (स्वामी इन्द्रवेश जी) से गुरुकुल झज्जर में हुई और उन दोनों ने खेत की मेड़ पर बैठकर भावी कार्यक्रम तय किया तो किसे पता था कि यह जोड़ी आर्य समाज में अभ्युदय की दीपशिखा बनकर प्रज्ज्वलित होगी। आकर्षक व्यक्तित्व और ओजस्वी वक्ता के रूप में जब इनका पदार्पण आर्य समाज के मंच पर हुआ तो उनकी महक से आर्य समाज महकने लगा। क्रांतिकारी विचारों का प्रस्फुटन जब उनके श्रीमुख से होता था तो श्रोतागण उत्साह से सराबोर हो जाते थे। आर्य राष्ट्र की स्थापना का उनका उद्घोष युवा हृदय में समा गया और इसका युवाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा। जो संकल्पाग्नि इन दोनों युवा हृदयों में दहक रही थी उसे व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करते हुए उन्होंने 1980 में स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली और दोनों युवा संन्यासी आर्य समाज में सशक्त पक्ष के रूप में स्थापित हुए। दुर्भाग्य से आज दोनों ही प्रभु की गोद में समा गये हैं।

स्वामी अग्निवेश जी ने अग्निमीडे पुरोहितम् को अपने जीवन में आत्मसात करके जिया। इस अग्नि के बिना न व्यक्ति सुधारक बन सकता है और न लेखन के लिए कलम चला सकता है। न व्यक्ति आध्यात्मिकता में पारंगत हो सकता है और न संस्कृति का अग्रदूत बनकर देश–विदेश में प्रचार कर सकता है। स्वामी अग्निवेश जी ने आजीवन संघर्ष किया। शालीनता और आक्रामकता दोनों ही भाव उनमें विद्यमान थे। इसीलिए वे तेजस्वी, ओजस्वी, मनस्वी और वर्चस्वी होकर जिये। इन दो परस्पर विरोधी गुणों का उनमें अद्भुत सामंजस्य था। उनके जीवन का संघर्ष उनके विरल व्यक्तित्व का आभास कराता था। ऐसे कर्मशील तथा जुझारू व्यक्ति मृत्यु के हाथों पराजित होकर मरते नहीं हैं, अपितु अमर हो जाते हैं और सदियों तक अभ्युदय की दीपशिखा बनकर आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करते रहते हैं। आज स्वामी जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी जलाई मशाल युवाओं के हृदय में हमेशा जलती रहेगी। उनके क्रांतिकारी विचार प्रखर भावना और ओजस्वी, तेजस्वी व्यक्तित्व सभी लोगों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

अन्त्येष्टि के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अत्यन्त रुंधे गले से स्वामी अग्निवेश जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी वह व्यक्तित्व थे जिन्होंने धन–धान्य से सम्पन्न घर और अत्यन्त सम्मानित नौकरी को लात मारकर गरीबों, निर्धनों और किसानों की समस्याओं के निराकरण के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। उन्होंने दबे, कुचले लोगों की भरपूर मदद की। वे एक ऐसे आर्य नेता थे जिन्हें उनके कार्यों के कारण विश्व स्तर पर कई बार सम्मानित किया गया। स्वामी जी ने कहा कि मैं यह समझता हूँ कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि उन्हें आर्यों ने कभी समझा ही नहीं। यदि आर्यों का सहयोग उनको प्राप्त हो गया होता तो आज आर्य समाज अपने पूर्ण वैभव में होता।

प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने स्वामी अग्निवेश जी को इतिहास पुरुष की संज्ञा देते हुए उनके द्वारा किये गये अविस्मरणीय कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी मानव मात्र की उन्नति चाहते थे। उन्होंने सही मायने में महर्षि दयानन्द सरस्वती के पद्चिन्हों पर चलकर आर्य समाज को विश्व में सम्मान दिलाया।

स्वामी अग्निवेश जी के देहावसान के समाचार को सुनकर देश–विदेश से भारी संख्या में शोक संवेदनाएँ प्राप्त हो रही हैं। मुख्य रूप से श्री अनिल जेटी, श्री सुधीरा शाम साऊथ अफ्रीका, श्रीमती रानी सिंह, पूर्व विधायक श्री अजीत सिंह, श्री डी. राजा महामंत्री सीपीआई, पूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन के सुपुत्र, पूर्व विधायक श्री नरेश यादव, श्रीमती कविता श्रीवास्तव पी.यू.सी.एल., वैदिक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजापार्क, वैदिक बालिका सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल राजापार्क, महर्षि दयानन्द लॉ कालेज, महर्षि दयानन्द बी.एड. कालेज, डी.ए.वी. सेन्ट्रल स्कूल बर्फखाना, जयपुर, श्री बलदेवराज आर्य मंत्री आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों के शोक संदेश प्राप्त हुए हैं।

अन्तिम विदाई के विभिन्न दृश्य

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के जीवन के अविस्मरणीय क्षण

Swamiji presents "RIG VEDA" and "SATYARTH PRAKASH" to King Abdullah of Saudi Arabia.

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के जीवन के अविस्मरणीय क्षण

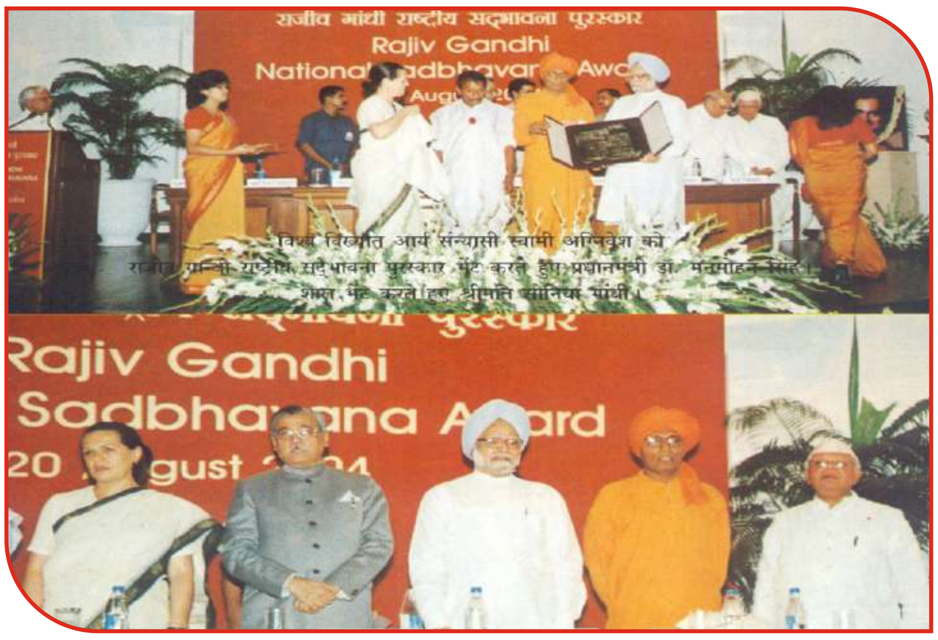

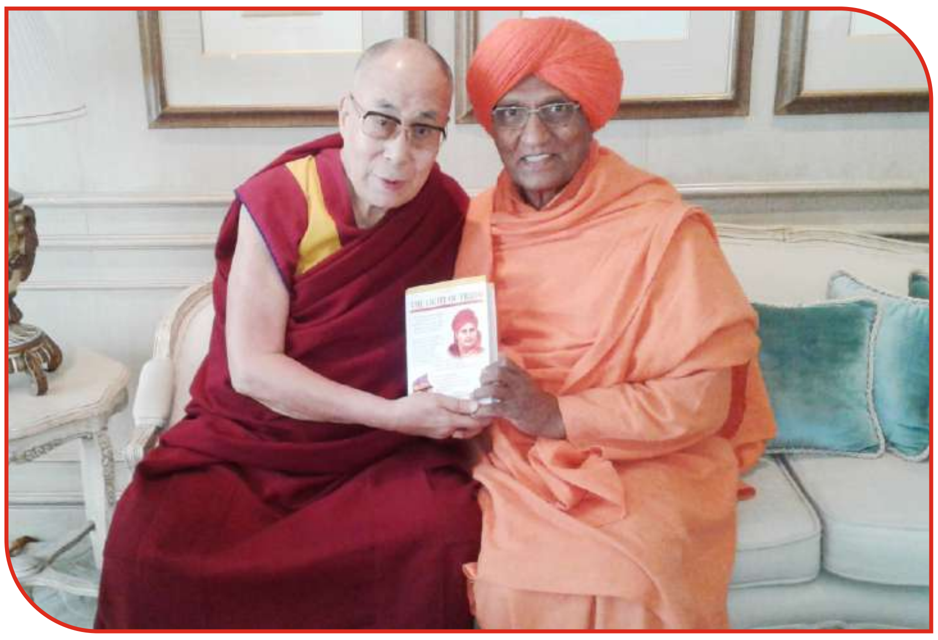

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के जीवन के अविस्मरणीय क्षण

देहावसान के दिन ही पूज्य स्वामी अग्निवेश जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरस्कार 'विजनर्स लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से किये गये सम्मानित

"Swami Agnivesh becomes the first Indian to receive Hero of Humanity award from Visioner's International Network."

Swami Agnivesh who in critical condition currently battling a debilitating liver and multiple organ affacted at ILBS, Vasant Kunj, New Delhi has been conferred upon the prestigious Hero of Humanity award by the Visioner's International Network. Swami Agnivesh who has relentlessly crusaded for the plight of the bonded and child labourers happens to be the first Indian to receive this honour, which has been bestowed upon luminaries like Florence Nightingale, Nina Meyerhoff, Tony Buzan, Robert Muller etc. The saffron clad social activist was attacked and beaten up by an orthodox right wing crowd in Pakur, Jharkhand two years ago and has been battling poor health since. His condition deteriorated in March and he has been hospitalized since.

The jury recognised his efforts for the most marginalized and the most voiceless and wrote -" We urgently pray for your recovery. We know that you do your work as a natural extension of who you are, without any expectation of reward, since the work itself and the outcome for its recipients is reward enough.At the same time, others, inspired by your example of the work itself, or healed by your

The Visioneers

The Visioneers International Network

Celebrates the outstanding contribution to improving the human condition

of

Swami Agnivesh

with a

Lifetime Achievement Award

as a

Hero of Humanity

There are a very few truly extraordinary people who are born to devote their lives to the service of humanity. Across the world, they face the challenge and opportunities of their time to uplift everyone whose lives they touch. These are the Heroes and Heroines of Humanity whose contributions to advancing the human project on Earth we wish to acknowledge, celebrate, and preserve as inspiration and guidance for the best that we can be.

This award recognizes and honours the exemplary and heroic contribution to the ongoing and positive development of a peaceful, sustainable, enriched and just quality of life for humanity.

Such Heroes of Humanity are the best expression of human nobility, whose courage to persevere lights the way for others to follow.

This award is a testament to their magnificent achievement.

Geraldine Schwartz, Ph.D — Desmond Berghofer, Ph.D

ministries, internalize the ideas profoundly and extend the work beyond your knowledge by their own newfound ability and energy. In this way, you add to humanity's reservoir of human goodness. It is this human resource that the Visioneers project is tapping into by showcasing the examples of yourself and others."

The jury further reiterated - We will showcase and celebrate your body of work on our Virtual Expo and in the Visioneers Masterworks Emporium of the Great Works of Our Time, but this Award Certificate is for you, to tell you how much of an impact you are having and how much your work is appreciated. Put it in your home in a place of honour, so you can see every day how much, you, your work, and the spirit you bring to life is valued by your peers, friends and colleagues. It is meant to engender a secret smile and encourage you to continue.

Thank you for your service to humanity. We offer you the Visioneers Lifetime Achievement Award as a Hero of Humanity."

विभिन्न स्थानों पर स्वामी अग्निवेश जी को अर्पित किये गये श्रद्धा सुमन

स्वामी अग्निवेश जी का निधन आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति इसकी भरपाई निकट भविष्य में नहीं दिखती

स्वामी अग्निवेश जी के निधन को मैं स्वभाविक निधन नहीं मानता, बल्कि उनकी हत्या की गई है। आदिवासियों को संवैधानिक हक दिलाने हेतु रांची के पाकुड़ में एक सभा को संबोधित करने गए थे, जहां उन पर जान लेवा हमला किया गया। उस हमले में उनके शारीरिक अंगों को जो क्षति पहुंचाई गयी, वही उनके निधन का कारण बना।

मैं समझता हूं कि स्वामी दयानंद के दर्शन को सही मायने में समझने वाला आज तक स्वामी अग्निवेश के अतिरिक्त आर्य जगत में दूसरा कोई नहीं हुआ।स्वामी दयानंद के दर्शन से प्रभावित होकर अपने ऐशो आराम की जिंदगी को तिलांजलि देकर प्रो०श्याम राव से स्वामी अग्निवेश बनकर सदैव सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुख भाग्भवेत्त तथा वसुधैव कुटुंबकम् को अमली जामा पहनाने में लगे रहे।दुख होता है कि स्वामी जी को उनके सपनों का समाज बनाने में आर्य जगत ने अपेक्षित सहयोग नहीं किया।

उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी की उनके सपनों का आर्य समाज बनाने का ब्रत लें। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें,यही प्रार्थना है। ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः।

– रामानन्द प्रसाद, बिहार

गरीबों के पक्ष में आजीवन लड़ने वाले, निरन्तर संघर्षरत मसीहा, दिवंगत स्वामी अग्निवेश जी को अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धांजलि

स्वामी अग्निवेश जी का नाम सुनते ही हर किसी के मनमस्तिष्क में गेरूआ वस्त्र धारी एक ऐसे संत और एक महापुरुष की स्मृति उभरने लगती है,जो अपने वाह्य आकृति से तो आज के कथित सन्यासियों जैसे ही लगते हैं,परन्तु उनकी विचारधारा, उनके कृतित्व और उनके द्वारा समय–समय पर दिए गये वक्तव्यों को सुनने पर ये आभास होने लगता है,कि ये आजकल के पाखण्डी, अंधविश्वास और ढोंग को बढ़ाने वाले छद्म कथित साधु–सन्यासियों से पूर्णतः अलग हैं।'

'उनका जन्म 21सितंबर 1939 को आंध्र प्रदेश में हुआ था। इनकी पढ़ाई–लिखाई कोलकाता में ही हुई थी और वे कोलकाता के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर भी काम कर चुके हैं। 1968 में वे एक आर्य सभा नामक राजनैतिक दल की भी स्थापना किए थे। वे हरियाणा में बहुत ही अल्पकाल के लिए मंत्री भी बने थे,परन्तु वहां मजदूरों पर हुए एक लाठीचार्ज की घटना के विरोध में वे तुरन्त इस्तीफा देकर मंत्री पद से विलग हो गये थे। बाद में वे बंधुआ मुक्ति मोर्चा नामक संगठन बनाए। वे एक ऐसी विचारधारा के पोषक थे,जो हमेशा वंचितों,दलितों,गरीबों, अल्पसंख्यकों और धार्मिक व जातीय संकीर्णतावादियों के खिलाफ स्वयं को खड़ा रखते हैं। वे अंग्रेजी भाषा में एप्लाइड स्पीरिचुएलिटीः ए स्पीरिचुएल विजन फॉर द डॉयलॉग ऑफ रिलिजन्स नामक पुस्तक भी लिख चुके हैं। उन्हें राजीव गाँधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार के साथ नोबेल पुरस्कार के समकक्ष प्रतिष्ठित श्राइट लाइवलीहुड अवार्ड श्भी मिल चुका है।'

'वे बगैर किसी डर–भय के सही बात कहने में कभी भी संकोच नहीं करने वाले व्यक्ति थे, उन्होंने एक बार करोड़ों हिन्दुओं के श्रद्धा के प्रतीक, लाखों लोगों के रोजीरोटी के अवलम्बन बने और करोड़ों–अरबों के व्यापार होने के कारण अमर नाथ की गुफा में शून्य से नीचे तापमान पर ऊपर से गिरते पानी जम जाने की वजह से बने बर्फ की शिला को शिवलिंग बनने की प्राकृतिक व वैज्ञानिक कारण बताकर, धर्मांध हिन्दुओं की आफत मोल लिए थे और इसके लिए उन पर बार–बार प्राणघातक हमले भी किए गये। इन्हीं बार–बार किए हमलों से इस क्रांतिकारी सन्यासी के लीवर में भयंकर अंदरूनी चोट लगी, जिससे वे गंभीर रूप से बीमार रहने लगे थे,उनको सबसे गंभीर शारीरिक चोट जुलाई 2018 में झारखंड के पाकुड़ के लिटपाड़ा नामक जगह पर बीजेपी समर्थक बीसियों गुँडों ने अचानक हमलाकर बुरी तरह से और गंभीररूप से घायल कर दिया था, उनसे पिछले साल नवम्बर 2019में उनके गुड़गांव स्थित आश्रम में मुलाकात के दौरान उन्होंने विनम्रतापूर्वक धीरे से मुझे खुद बताया था कि मैं पूर्णतः स्वस्थ्य हूँ, परन्तु मेरे लीवर में कुछ परेशानी है। इस अस्सी वर्षीय संत ने 22,23 और 24 नवम्बर 2019 को गुड़गांव स्थित अपने तीन एकड़ के फूलों और वृक्षों से आच्छादित हरे–भरे अग्नियोग आश्रम में वसुधैव कुटुम्बकम नामक एक सामाजिक सद्भावना कार्यशाला के आयोजन में मुझे भी आमंत्रित किए थे,मैं तीनों दिन उनके साथ रहा,इस आधुनिक निरपेक्ष, निस्पृह और बहादुर वास्तविक संत को मैंने नजदीक से परखा,देखा और गहराई और सूक्ष्मता से समझने की कोशिश किया,मेरे दृष्टिकोण से आज के धार्मिक,जातीय और सांप्रदायिक असहिष्णुता के दौर में,जिसमें अधिकतर दृश्य मिडिया से लेकर प्रिंट मिडिया भी सत्ता की चाटुकारिता में लगी हुई है,अपने स्वाभिमान को ताक पर रखकर उसके पैरों में दण्डवत् होकर रेंग रही है,उस विपरीत दौर में भी इस बहादुर संत द्वारा अपनी बातों और विचारों को बेखौफ होकर रखना,एक बहुत ही बहादुरी और दिलेराना वाली बात है।

'वंचितों, शोषितों, मजदूरों, किसानों, आमजन के हक में आजीवन आवाज उठाने वाले, असली सन्यासी, क्रांतिकारी, भारतीय समाज और देश का वास्तविक भला सोचने और उसे करनेवाले प्रखर दिग्दर्शक, प्रखर वक्ता, समाजसुधारक स्वामी अग्निवेश हमारे बीच नहीं रहे..शोषकों, अत्याचारियों, फॉसिस्टों के खिलाफ उनकी उठाई मशाल को हमें लगातार प्रज्ज्वलित रखना ही होगा,स्वर्गीय स्वामी अग्निवेश जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सभी संगठित होकर उनके उक्त विचार रूपी मशाल को भविष्य में भी हम उसे आगे भी प्रज्ज्वलित रखें..।'

–निर्मल कुमार शर्मा, गाजियाबाद, उ. प्र.

वैदिक समाजवादी दर्शन के प्रणेता वंधुआ मजदूरी, शोषण और पाखण्ड की मुक्ति हेतु संघर्षरत रहे स्वामी अग्निवेश जी

जयपुर, सामाजिक कार्यकर्ता कान्तिकारी ओजस्वी वक्ता स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर मुहाना मंडी रामपुरा रोड स्थित निराश्रित जनों की सेवार्थ प्रकल्प ओ३माश्रय सेवाधाम परिसर में शांति यज्ञ हुआ। संस्थान सचिव डॉ प्रमोद पाल ने बताया कि दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने कहा कि स्वामी अग्निवेश ने हर तरह के शोषण को मिटाने हेतु आखिरी दम तक संघर्ष किया।यश ने कहा कि रोम के ऐतिहासिक चर्च में महिलाओं की अनुपस्थिति पर आधी आबादी कहां है जैसा साहसपूर्ण प्रश्नचिंह लगाया वंही ईद में कुर्बानी के नाम पर मूक पशुवलि का विरोध किया।यश ने कहा कि वेदानुसार आर्य राष्ट्र निर्माण हेतु आर्य सभा राजनैतिक दल बनाकर वैदिक समाजवादी दर्शन दिया। पाखण्ड और शोषण के विरुद्ध बेबाकी से अनेकों जानलेवा हमले सहे।यश ने कहा कि यज्ञोपवीत रक्षार्थ जयप्रकाश नारायण से सीधी बात करते वाले वे सच्चे भगवा समर्थक रहे।

– यशपाल 'यश'

स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में अल्मोड़ा में किया गया श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

आर्य समाज अल्मोडा मे स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर उनको भावभीनी श्रद्धान्जली देने के लिये आयोजित कार्यक्रम मे समाज के बिभिन्न, समजिक क्षेत्र के लोगो ने भागीदारी की। शोक सभा का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के मंन्त्री दयाकृष्ण काण्डपाल ने किया कार्यक्रम मे मुख्य बक्तब्य देते हुऐ नगरपालिका परिषद् अल्मोडा के अध्यक्ष प्रकाश जोशी ने कहा स्वामी अग्निवेश गरीब मजदूर व पीडित पक्ष की आवाज थे । उ लो वा के महासचिव पूरन चन्द्र तिवारी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश उत्तराखण्ड के जनसंघर्षो के संरक्षक थे । एडवोकेट जगत रौतेला ने कहा कि स्वामी जी १९८१ मे चिपको आन्दोलन से उत्तराखण्ड मे सक्रिय हुये तो आजीवन बने रहे। अध्यक्षता कर रही रेवती बिष्ट ने कहा कि वे शमशेर सिह बिष्ट के अनन्य मित्रो मे शामिल रहे। आर्य समाज के मन्त्री दिनेश तिवारी ने कहा कि स्वामी जी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज की आवाज थे कर्मचारी नेता चन्द्रमणी भट्ट ने कहा कि स्वामी जी को मजदूरो की सशक्त आवाज के लिये याद किया जायेगा। आम आदमी पार्टी के अमित जोशी ने कहा कि लोक संघर्ष मे निडर ब्यक्ति के रूप मे स्वामी जी याद किये जायेंगे। अन्ना आन्दोलन के साथी आशीश जोशी ने कहा कि आन्दोलनो मे युवाओ के साथ सम्पर्क साधना उनकी विशेषता थी । अजय मित्र बिष्ट ने कहा कि स्वामी जी कभी भी अपशब्द किसी को नही कहते थे ।गौरब भट्ट मे कहा कि स्वामी जी ने आर्य समाज की दुन्दुभी संसार भर मे फैलाई । अजय मेहता नेहा कि स्वामी जी को बाल संरक्षण के लिये याद किया जायेगा।

अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के मंन्त्री व बंधुवा मुक्ति मोर्चे के संयोजक दयाकृष्ण काण्डपाल मे कहा कि स्वामी जी सप्तक्रान्ति, विश्व बन्धुत्व के लिये हमेशा याद किये जायेंगे। अन्त मे मौन रखकर उन्हे श्रद्धान्जली दी गई। आत्मा की शान्ति के लिये शान्तिपाठ कर दिवंगत आत्मा के मोक्ष की कामना की गई।

– दयाकृष्ण काण्डपाल, मंत्री

स्वामी अग्निवेश जी का जाना आर्य समाज के लिए अपूर्णीय क्षति

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संन्यासी, क्रांतिकारी आर्य नेता व सामाजिक कार्यकर्ता श्रद्धेय स्वामी अग्निवेश जी के निधन की सूचना अविश्वसनीय है। स्वामी अग्निवेश जी जैसै आर्य विद्वान, निडर, स्पष्टवादी, ओजस्वी राष्ट्रभक्त आत्माऐं धरती पर कभी कभार जन्म लेती हैं। आर्य समाज में उनकी जगह कोई नहीं ले सकता।

आर्य समाज की हरियाणा ईकाई से स्वामी इंद्रवेश जी के साथ संघर्ष शुरु करके विश्वविख्यात स्तर तक अपनी अलग पहचान बनाने वाले स्वामी अग्निवेश जी ने हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री के रूप मे अद्भुत कार्य किया। उन्होंने बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिये बहुत संघर्ष किया। स्वामी जी अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत से ही मेरे पितामह स्व0 श्री कृष्ण चंद्र आर्य जी के समय से आर्य समाज, यमुना नगर व हमारे घर पर निरंतर आया करते थे तथा समाज एवं राष्ट्र कल्याण की आगामी नीतियां बनाया करते थे। जीवन में अनेक बार उन्हें ऋषि दयानंद के सपनों को पूरा करते समय हिंसा का शिकार भी होना पड़ा। परंतु वे ऋषि दयानंद के सिद्धांतों से टस से मस नहीं हुए।

ऐसी महान आत्मा का हमारे बीच न रहना आर्य समाज सहित पूरे राष्ट्र तथा हमारे लिए व्यक्तिगत रूप में अपूर्णीय क्षति है। ईश्वर उनकी महान् दिवंगत आत्मा को शांति सदगति प्रदान करें।

– मोहित आर्य, मंत्री–आर्य समाज, यमुना नगर (हरियाणा)

आर्य वीरदल जोधपुर ने पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में आयोजित की श्रद्धांजलि सभा

श्रद्धांजलि सभा में आर्य समाज तथा आर्य वीरदल, जोधपुर के पदाधिकारियों ने स्वामी अग्निवेश जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में मुख्य रूप से श्री राम सिंह आर्य, श्री भंवर लाल आर्य, श्री चांदमल आर्य, श्री हरदेव आर्य, श्री यजपाल ज्ञानी (सोजटी गेट), श्री रंजीत सिंह ज्ञानी, श्री भगत सिंह राजपुरोहित, फादर थॉमसन, श्री गंगाराम जी जाखड़, श्री राज गहलोत, मारवाड़ मुस्लिम एजुकेशन सोसायटी के चेयरमैन श्री अतीक शाब, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री किशन सिंह जी देवड़ा, श्री मनोज कुमार रेलवे यूनियन, श्री नरेन्द्र सिंह कछवाह, श्री आजम जोधपुरी, श्री कामरेड गोपीकिशन, श्री हरि सिंह आर्य, डॉ. लक्ष्मण सिंह आर्य, श्री विनोद गहलोत, श्री उम्मेद सिंह आर्य, श्री गणपत सिंह आर्य आदि।

हाल के वर्षों में स्वामी अग्निवेश धार्मिक सहिष्णुता और अन्तर्धार्मिक समरसता की प्रंशसनीय आवाज थे

अग्निवेश : जिन्हें बात घुमाकर कहना नहीं आता था

– शशि थरूर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री और सांसद

मैंने स्वामी अग्निवेश को पहली बार तब सुना था जब मैं जेनेवा में शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त के कार्यालय में काम कर रहा था। ये वहां पर दासता के समकालीन तरीकों पर बने कार्यदल के समक्ष संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में गवाही देने आये थे। भगवा कपड़े और पगड़ी पहने अग्निवेश की प्रभावी उपस्थिति और उनके तीखे भाषण के साथ ही उनकी जलती हुई आंखें बिना फ्रेम वाले चश्मा पहने लोगों को बेचैन कर रही थी। जिन्होंने भी जेनेवा में उन्हें एक्शन में सुना वे उन्हें भूल नहीं सकते। पिछले सप्ताह शुक्रवार को करीब 81 साल की उम्र में उनका निधन हुआ। यह कई लोगों के लिए एक रहस्य थे। जन्म से ब्राह्मण अग्निवेश की परवरिश उनके दादा ने की। जो एक रियासत के दिवान थे। लेकिन उन्होंने अपनी पहचान सीमित व दबे कुचले लोगों के साथ बनाई। एक हिन्दू साधु जिसने 30 साल में संन्यास ले लिया था। उन्हें आखिर तक हिन्दुत्व के कुछ स्वयंभू समर्थक निशाना बनाते रहे। वह एक राजनेता रहे, विधायक रहे और प्रदेश में कैबिनेट मंत्री भी रहे। पिछले कई दशकों से उन्होंने कोई राजनीतिक पद नहीं लिया था। यह एक आर्य समाजी थे, जो उसकी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के एक दशक तक प्रमुख भी रहे। बाद में खुद की आर्य सभा के गठन के लिए वह उससे अलग हो गये। वह ऐसे व्यक्ति थे जो भारतीय मुद्दों और चिन्ताओं के लिए प्रतिबद्ध थे और उनकी एक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय पहचान भी थी। वह 1994 से 2004 तक दासता के समकालीन प्रकार पर संयुक्त राष्ट्र वॉलियंट्री ट्रस्ट फण्ड के अध्यक्ष रहे। वह कुल मिलाकर एक ऐसे भारतीय थे जो जन्म से आन्ध्र प्रदेश के थे, छत्तीसगढ़ में बड़े हुए, हरियाणा में विधायक बने और जिन्हें पूरा देश जानता था। इस सबसे ऊपर वह एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। मंत्री रहते हुए भी बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से बंधुआ मजदूरी के खिलाफ उनके प्रयासों की वजह से काफी सफलता मिली।

81 साल पहले वेपा श्याम के. राव के रूप में जन्में स्वामी अग्निवेश तमाम विवादों को समेटे होने के बावजूद भारतीय सार्वजनिक जीवन के सर्वाधिक असाधारण व्यक्तियों में याद किये जायेंगे। ये मेरा सौभाग्य था कि करीब 12 साल पहले राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश के समय से ही मैं उन्हें जानता रहा। उन्होंने 1980 के दशक के बाद कभी परम्परागत चुनावी राजनीति नहीं की और वोट की छद्म लोकप्रियता के लिए कोई पद हासिल नहीं किया। लेकिन इसके बावजूद वह उस मुद्दे के लिए अथक अभियान चलाते थे जिसे वह उचित समझते थे। वह व्यक्ति जिसके पास कानून और कामर्स की डिग्री थी व जिसने कभी उस व्यक्ति के जूनियर के रूप में प्रैक्टिस की थी जो बाद में देश के मुख्य न्यायाधीश बने। उसने अपनी सारी जिन्दगी अन्यायपूर्ण कानूनों को चुनौती देने और उन्हें बदलवाने की कोशिश में लगा दी। कुछ मामलों में उन्हें सफलता भी मिली जैसे कि बंधुआ मजदूर निवारण कानून, वह अनेक तरीकों से सती प्रथा पर रोक के लिए बने कानून के भी आध्यात्मिक प्रणेता रहे।

एक धार्मिक और आध्यात्मिक विचारक स्वामी अग्निवेश ने अपने हिन्दुत्व का परिणय, अपने सामाजिक विश्वासों के साथ कर दिया और वह इसे वैदिक समाजवाद कहते थे। बाल दासता से लेकर, कन्या भ्रूण हत्या जैसे मुद्दों के खिलाफ उनके अथक आन्दोलन देशभर में चलते रहे। इस प्रक्रिया में उन पर हुए हमलों में वे बाल–बाल बचे। झारखण्ड में तो वह भीड़ का शिकार होते–होते हुए बचे थे। आन्दोलनों की वजह से वह कई बार जेल भी गये। उन्हें अनेक बार गिरफ्तार किया गया। लेकिन न तो कभी आरोपित किया गया और न ही उन्हें सजा मिली। उन्हें एक बार तो 14 महीने तक जेल में रहना पड़ा। उन्होंने फरवरी 2011 में माओवादियों द्वारा अपहृत पांच पुलिस वालों को छुड़ाने में भी मदद की थी।

हाल के वर्षों में वह धार्मिक सहिष्णुता और अन्तर्धार्मिक समरसता की प्रशंसनीय आवाज थे। वह अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर इस्लाम और मुस्लिम समुदाय को समझने का आह्वान कर चुके थे। उन्होंने आतंकवाद पर होने वाले जन संवाद में भी दखल दिया था। उनका साफ कहना था कि कुछ लोगों के गलत कामों की वजह से पूरे समुदाय को आरोपित करना गलत है। कई–कई बार वह अपने सिद्धान्तों को इतनी नरम भाषा में कहते थे कि मुझ जैसे अनेक उदारवादी भी उनका समर्थन करने में कठिनाई महसूस करते थे। वह कहते थे कि मैं यह कहने के लिए कि अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी है शब्दों को बदल नहीं सकता। इस्लाम और कुरान को बदनाम करना आतंकवाद का सबसे खराब रूप है। अंधविश्वास और कट्टरता के आलोचक रहे अग्निवेश इनके प्रगतिवादी विचारों के वजह से कुछ संगठनों के निशानों पर रहे। जैसे कि उनका सुझाव था कि पुरी के जगन्नाथ मंदिर को गैर हिन्दुओं के लिए भी खोला जाना चाहिए। इसके बावजूद स्वामी अग्निवेश वह व्यक्ति थे जिन्होंने अपना जीवन, समय और ऊर्जा अपने सपनों के पीछे लगा दी। मैं उन्हें याद करूंगा। ओ३म् शांति।

Swami Agnivesh: Reflections and Memories

By: Katherine Marshall

September 14, 2020

What words and what examples come to mind when asked to highlight Swami Agnivesh's example for the upcoming generation? For those who must take this extraordinary moment when the COVID-19 emergency has thrown so many accepted norms and normal patterns into questions, what can they learn from this remarkable, truly unique force of nature?

For me, he exemplifies a quality we devoutly wish for and need to see in spiritual and religious leaders: the courage to speak truth to power. Often uncomfortable truths. Spoken with clarity, no beating around the bush or mincing words. That truth-telling needs a kind of "no holds barred" courage and a commitment to truth. And to whomever is in power, whether they want to hear it or not. This is an example that is sorely needed today, when there is far too little truth and far too little courage. This quality of Swami Agnivesh and the example he sets go alongside a constant compass that is focused on those who suffer and who are vulnerable. He speaks and acts from a deeply considered commitment to justice and fairness.

I met Swami Agnivesh not long after being tapped by World Bank President James Wolfensohn (in 2000) to translate an idea and ideal of dialogue between religious and secular leaders committed to development into reality. That challenge initially focused on two forms: first, meetings that brought together people from the two groups, and second, looking beyond warm statements that included an undue dose of platitudes to understand better the reasons for discord and, still more, hostility and indifference. I have thus had the privilege of meeting Swami Agnivesh often, in very different settings, in different corners of the world. We have also corresponded and spoken on other occasions. We shared a panel discussion on the role of faith in the Asia Pacific region in early July this year, as part of the United Nations High Level Political Forum.

Two interviews that I did with him and wrote up explored how he came to his sui generis role: spiritual leader ready to contest and fight, skeptic about organized religious bodies but always willing to listen, dreamer of a better world. These are part of a collection on Georgetown University's Berkley Center website. They highlight an unusual journey and his robust commitment to truth and justice.

An avalanche of memories of the striking figure who took on topics ranging from hunger to HIV/AIDS to slavery should make a book. I treasure the memories and the orange headpiece that he put on my head twice during meetings, a testimony to a special friendship.

Three moments I was part of illustrate Swami Agnivesh's witness and his lived example.

During a visit to India, Swamiji invited me to visit

a site where bonded laborers—children for the most part—had been freed. They had been enslaved as brickmakers. The visit involved an overnight train trip and a public gathering marking the events. At each point as people approached and wanted to bow to the Swami, he resisted: People are equal and traditional obeisance to religious figures is inappropriate, he said. He inspired a crowd gathered to celebrate but also spoke to individuals about their fears and hopes for the future.

At a meeting in Indonesia in 2003 to reflect on a draft Universal Declaration of Human Responsibilities, a notable group was assembled, many former heads of state and learned figures. Balancing rights and responsibilities was the topic of the day. It was the eve of the invasion of Iraq and many expressed their doubts about the wisdom of what seemed the inevitable impending events. Swami Agnivesh suggested that the group move, one and all, to Iraq to serve as a human shield. I wish I had more than a mental image of the faces of his audience. Needless to say, there was no mass move towards Iraq but the challenge was clear: One should be willing to act on one's words and beliefs.

In Rome, Pope Francis visited the World Food Programme headquarters there to support global efforts to end hunger, which is the thrust of the United Nations Sustainable Development Goal 2: zero hunger. In an interfaith discussion the day before, Swami Agnivesh spoke forcefully and with no political correctness about the underlying injustices that cause hunger. He also called for action beyond words. His few words to Pope Francis conveyed the same sense of urgency, care, and commitment to and belief in the common purpose that was the essence of the event.

The palette of Swami Agnivesh's lifework is filled with intersecting colors and textures, reflecting vividly the deeply interconnected aspects of both justice and cruel wrongs. His work to fight modern slavery translates to commitments to rights of children, women, class, and castes. His commitment to education reflects a deep faith in the potential of humanity, given the chance. His interest in HIV/AIDS leaves aside causes of disunity and focuses on compassion and action. Despite some well-founded doubts about the benefits of interreligious dialogue events where many disagreements and tensions remain masked, Swami Agnivesh has never hesitated to engage with a spirit of moving the dialogue forward.

The complex threads of religious roles in conflict, in India and elsewhere, have drawn Swami Agnivesh into active roles in conflict mediation and into courageous stances calling for truth and justice. His courage and willingness to take on powerful interests are noteworthy, even notorious. When the voice of the voiceless and their welfare is at stake, it is the time to act.

That's central to the legacy and example: Not only must a true leader speak truth to power, they must also work constantly to carry ideals into action.

Swami Agnivesh: Champion of Humanity

Dr Akbar Ahmed, American University Washington, DC

There are few more inspiring Christian houses of worship than the great cathedral at Canterbury in the UK. It is of course associated with the killing of the Archbishop of Canterbury, Saint Thomas Becket, and his rivalry with his former friend King Henry. Those who would like to know more about that episode in English history could do no better than to see the classic film Becket. It is one of my favorite films and it has two of the most outstanding British stage actors who went on to star in Hollywood films, Richard Burton and Peter O'Toole.

In Canterbury there I was, having to negotiate the steep narrow staircase in the belly of the cathedral up to the roof accompanying Swami Agnivesh wearing his saffron-purple turban and robes. As we reached the top and viewed the rolling English landscape we talked of religion, of identity, and of history. We discussed our efforts to build bridges. It was a strange but inspiring moment when a Hindu Swami and a Muslim scholar climbed to the top of a Christian Cathedral and formed a bond of friendship.

It was appropriate because we had been invited to participate in an extraordinary interfaith gathering hosted by Dr. George Carey, the Archbishop of Canterbury, and his friend Jim Wolfensohn, the president of the World Bank in October 2002. It was a brilliant idea to combine spirituality with issues of economic development. Here were two visionaries wanting to change the world for the better. Neither of them knew how critically important their simple idea would become after 9/11when the planes hit the World Trade Center and the Pentagon in the United States.

This meeting was a gathering of the high and the mighty. There were chief rabbis, cardinals, lords, secretaries of state, and of course his Holiness Swami Agnivesh from India. In addition to these luminaires there was Bono, Mr. Paul Hewson, the lead singer of the band U2. Bono was then riding high as the knight in shining armor charging all over the world helping to alleviate poverty, debt, and AIDS. Time magazine on the cover of its March 2002 issue asked, "Can Bono Save the World?" Nafees, my daughter then at high school in Bethesda, Maryland, was not particularly impressed by any of the grand religious leaders I mentioned, but when I told her Bono was there too her face lit up.

There was an urgency in the gathering which Dr. Carey summed up in these terse words: "The world is in a terrible mess." There was controversy at the time about attacks in the media on the Prophet of Islam and I discussed this with the Archbishop at the meeting. He said he wished to go on record calling these remarks "outrageous." He said the Prophet of Islam was a great teacher and he admired the Abrahamic spirituality of Islam. Such attacks on Islam appalled him as they degraded Christianity itself. Christianity by definition, he explained, is about compassion and hope. Archbishop Carey, now Lord Carey, has continued to play a major international role in promoting interfaith understanding and friendship.

The Swami had already written about the tensions in his homeland and condemned the actions of his co-religionists who were attacking minorities, especially the Muslims, which he described in his book Harvest of Hate: Gujarat Under Siege. His approach to peacebuilding and minorities can be seen in his admiration for Mahatma Gandhi, and the Swami often quotes the popular Indian slogan, "O Gandhi! We are ashamed your assassins are alive and well."

The Swami was also an activist in promoting dialogue between India and Pakistan. He prayed for peace between the two neighbors.

I was impressed enough by Swami Agnivesh even in that company to mention my meeting with him in my book Islam Under Siege published by Polity Press, Cambridge, the next year in 2003. That meeting at Canterbury began a friendship with the Swami that has lasted for two decades and been kept in place by letters, occasional meetings, and even by the Swami's visits to my class and his lectures to my students at American University. When he last came to my university in 2018 dressed in saffron robes wearing a saffron turban and accompanied by younger swamis dressed in a similar style, he made an impression on my students. He preached peace and compassion and spoke intelligently about the problems of the world.

One of my bright students, Will Shriver, described the visit of the Swami to the class: "As a student studying South Asia and trying to understand the complexities of the pluralistic region, it was an excellent opportunity to hear from the Swami on his interfaith work and the violent opposition he faces by some Hindu nationalists in India. Professor Ahmed and the Swami discussed the internal resistance the Swami was facing by Hindu nationalists in India. He discussed the attacks by the RSS and the BJP on his life because of what he stood for. They also talked about his interfaith efforts in India with different communities. The conversations the Swami had with Professor Ahmed inside our classroom were invaluable to understanding Islamic-Hindu relations and South Asia."

But speaking of religious tolerance and compassion in my class or in the peaceful pastures of England is one thing and quite another in the overheated and passionate environment of the Swami's homeland. While his supporters admired him, his critics waited to punish him. It happened in the summer of 2018: the Swami, at the age of 80, was set upon by a gang of thugs who were waiting to ambush him outside his hotel in Jharkhand. When he appeared, they pounced on him. They beat him violently, tearing his clothes off and injuring him so badly he had to be hospitalized. It was touch and go and the Swami was aware that he had escaped with his life. "I'm alive today by God's grace," he reflected.

A shadowy group aligned to the ruling party accused him of instigating Christians who in turn were accused of misleading tribal peoples into opposing the government. The next year in the same region Tabrez Ansari, a young Muslim man, was tied to a tree by a Hindu lynch mob and beaten until he eventually died. It was the season of lynching and mob murders. The Swami was lucky to have gotten away with his life.

This July as the pandemic raged in the US, I received the following personal email from the Swami which I could not ignore given the fact that he was in hospital and it was written from his sick bed. Besides, he was 82 years old and not in good health. The Swami wanted me to contribute a chapter to a volume dedicated to him. I set everything aside and sat down to write it. There are prominent world figures who have contributed to the volume on the Swami. The Swami's inclusive attitude to humanity can be seen by his insistence from his hospital bed that I, with my Pakistani background, be invited to join his circle of friends and admirers which include, among others, the Dalai Lama and Justice Krishna Iyer.

"My dearest ambassador Akbar Ahmed, Since I know your contribution will be one of the most valuable I would urge you to extend the time up to 15 August and see if you can find time to do a good write up. If you have any other suggestion please let me know. I am going to have liver transplant very soon and continuously in the hospital. Thank you once again for your very kind response, Yours Swami Agnivesh."

Reflecting on his life, the two points that strike me in the Swami's life are first, his consistency in his interfaith work in promoting understanding and peace and second, his bold and unambiguous interpretation of what true interfaith means. From support of tribals to minorities in India facing persecution and oppression to larger causes for humanity, the Swami is there

making his voice heard. He represents a continuous and unbroken tradition within Hinduism which has fostered the key concepts of shanti or peace and ahimsa or non-violence. His renouncing the material world too, he was at one stage a government minister, is part of his religious tradition.

It is his love of humanity that creates his exasperation with the political situation in India which engenders communal violence: "But this one thing I know: the Modi show is based on violence and malevolence—linguistic, sentimental, ideological and communal. His idea of patriotism is no more than hostility towards Pakistan. But time will prove that reducing the outcome of the world's largest democratic franchise to settling scores with a neighbouring country, in utter indifference to pan-Indian lived realities, is at once idiotic and irresponsible" ("A lot to say, but little to offer," The Hindu, April 16, 2019).

For my current academic project inspired by the mystic Dara Shikoh, the eldest son of the Mughal Emperor Shah Jehan, which takes its title from the great work of the prince, The Mingling of the Oceans, I asked the Swami to define God in the Hindu tradition and share with me the essence of the faith in January 2019. He replied promptly from Delhi, in spite of illness: "One God of the whole universe," he wrote.

"Creator, sustainer and destroyer and there is integrity of creation and interdependence of all living creatures. God is formless, all pervasive, all powerful and energy of all truth, all compassion, all love and all justice. God is supreme existence, supreme consciousness and supreme source of all bliss. God worship is therefore the most central theme of all human beings to attain bliss and liberation."

Was Hinduism a universal religion? The Swami's answer was unequivocal: "All of humanity is one single family negating all discriminations in the name of caste, colour, creed, nationality, gender bias and the rich and poor divide."

Based on a lifetime of practical experience and spiritual seeking, the Swami had ideas for the way forward: "The most important aspect is to create a World Parliament and the World Government based on the Constitution of the Federation of Earth in order to realise the above Goal. The whole of humanity is equal partner in all the resources of the world and therefore we need to create an Egalitarian Society. Only that which is Universal and is applicable for the whole of humanity on the basis of equal human dignity is my Dharma, my Faith.

It is out of profound love and compassion for all of humanity as my own family I share my thoughts through my actions and my writings. This is what I call pro active social spirituality on the basis of which I strive for Justice, social economic and political Justice for those who are least among the last, the victims of modern day slavery. There can be no place for any use of force, let alone any type of violence. Nonviolence is therefore my culture, my dharma and is not confined to human beings but also to my extended family of birds, animals and bees."

Mahatma Gandhi who lived and died promoting interfaith harmony recited the following verses as his favorite: "ishwar allah tero naam, sab ko sanmati de bhagavan" ("All names of God refer to the same Supreme Being, including Ishwar and Allah. O Bhagwan, please give peace and brotherhood to everyone").

Swami Agnivesh cited these verses in my class in Washington, DC in November, 2018: "Ekam sat vipra bahudha vadanti" meaning, "There is one God or truth, [but] people call it by different names." As the Maha Upanishad tells us, "Vasudhaiva Kutumbakum—the whole world is a family."

The Hindu philosophy of universal compassion, sacrifice and service preached by the Mahatma and the Swami is captured in a popular song from Baazi, a 1951 Guru Dutt film starring Dev Anand: "Kiya khak wo jeena hey jo apney hi ley ho—khud mit key kisi aur ko mitney say bacha ley—apney par bharosa hey to yeh dawo laga ley" ("What is the point of living if it is for yourself alone; save someone from being destroyed even if you destroy yourself; if you have confidence in yourself step forward and take the plunge").

When I shared my writeup of his comments with him in January 2019, he responded: "Thank you, thank you, thank you Ambassador Akbar Ahmed for beautifully placing what I had sent you as answers to your simple three questions. I had not realised the importance you have given to my simple thoughts. Indeed you are a man of pure heart. Warm personal regards, Swami Agnivesh."

Four months later, in April 2019, the Swami reacted to an article my daughter, the scholar Dr. Amineh Hoti, had written about the Kalasha people of North -West Pakistan:

"Congratulations Dr. Hoti for the beautiful article about beautiful Kalasha people. I hope I will be able to visit these people one day and share their unique culture. They seem to be like a tribal culture which has more of gender equality and close to nature, of simplicity not given to consumerism. Thank you so."

The profoundly moving words of the Dalai Lama and Justice Krishna Iyer about the Swami are worth repeating as they sum up the man. Here is the Dalai Lama:

"Swami Agnivesh, who it has been my privilege to know and meet on many occasions, is a contemporary exemplar of these ancient values. He is someone who doesn't simply hold fast to his principles, but whose practical turn of mind moves him to take whatever opportunity he can to put them into effect. He has been unflinching in his work to improve the lot of the underprivileged and downtrodden, especially bonded labourers and child labourers, and has been vocal in his support for equal rights for women, such as their right to education and to read scripture. His work to foster inter-religious harmony is reflected in the respect in which he is held by the Hindu, Muslim, Sikh, Christian, Jain, Buddhist, Bahai, and Jewish communities in this country. He has also stood firm in his resolve to create peace and defeat terrorism by engaging in dialogue and cementing the bonds of friendship."

Justice Krishna Iyer, himself a towering literary figure and former Justice of the Supreme Court of India, has written: "My poetic mood, viewing India and the world and the hidden agendas of those who control society, is unpleasant. At the sunset of life, my brief hour sees the darkling hues in the sky. But when I meet Agnivesh I remember Shakespeare: What a piece of work is a man! How noble in reason! How infinite in faculty! in form in moving, how express and admirable! in action how like an angel! in apprehension how like a god!"

Following these great names and the others who have contributed to the volume I am truly humbled. My assessment, indeed tribute, to the Swami is based entirely upon empirical evidence. This is how it should be as I have been trained as an anthropologist. For me facts based on what I see and observe are the basis of my judgement.

As long as Indian society can produce a Swami Agnivesh there will be hope for those who value humanity and compassion and intelligence and wisdom. May I add my humble voice to those who have already paid him the highest compliments. I offer him my salute and also my dua. The salute is for his unflinching humanity. The world needs the Swami; my dua is to his fellow countrymen to value him and keep him safe away from the hatred with its knives and pistols.

My plea to those thugs who almost killed the Swami and are perhaps waiting to finish the job: leave him alone. Value him as a guru and guide. You have not spared swamis, Muslims, nor even nuns. This is neither spirituality nor religion, as the Swami teaches us.

That is why I was saddened to hear the news that Swami Agnivesh had just passed away. My prayers go for his noble soul and his grief-stricken family. Great clouds of hatred and violence hang low over the South Asian region and will only be dispersed by love and universal compassion. The world has lost a champion of humanity.

विश्व विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक तथा दबे–कुचले, प्रताड़ित व्यक्तियों के मसीहा

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक में

विशाल श्रद्धांजलि सभा का किया गया आयोजन

स्वामी अग्निवेश जी के नाम से विश्व स्तरीय संस्थान बने

–चौ. भूपेंद्र सिंह हुड्डा

साहसी व निर्भीक संन्यासी थे स्वामी अग्निवेश

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के नेता व मानवाधिकार कार्यकर्ता, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक स्वामी अग्निवेश जी की श्रद्धांजलि सभा व शांति यज्ञ का आयोजन स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम टिटौली में किया गया। इस अवसर पर हरियाणा की आर्य समाजों के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने स्वामी अग्निवेश जी के शांति यज्ञ में आहुतियां देकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक व साहसी संन्यासी थे। वो सत्य के लिए लड़ते थे। इसके लिए वो बड़ी से बड़ी ताकत से टकराते हुये नही घबराते थे। स्वामी जी ने उनके जीवन के दस से ज्यादा घटनाक्रम सुनाए जब उन पर कातिलाना हमले हुये लेकिन वे कभी पीछे नही हटे। सती प्रथा विरोधी कानून बनवाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। लगभग पौने दो लाख बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराकर पुनर्वासित कराया तथा नया जीवन दिलवाने का उन्होंने कार्य किया है। बंधुआ मजदूरो के लिए सुप्रीम कोर्ट से कानून बनवाना उनकी बड़ी उपलब्धियों में शामिल रही है। साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए, देश की एकता व अखंडता के लिए वो आजीवन लगे रहे। सऊदी अरब के राजा को सत्यार्थ प्रकाश देना उनके साहस का एक उदाहरण है। अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश को उन्होंने पहली बार चारों वेद व स्वामी दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भेंट की तथा विश्व शांति का संदेश भारत से लेने का आग्रह किया था। स्वामी अग्निवेश जी ने 50 हजार से ज्यादा सत्यार्थ प्रकाश छपवाकर बंटवाई थी जब वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान थे।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री व हरियाणा में विपक्ष के नेता चौ. भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी संघर्षों के लिए याद किये जायेंगे। समाज मे उनके द्वारा चलाये गए आंदोलनों को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने के लिए उनकी स्मृति में एक विश्व स्तरीय संस्थान बनना चाहिए। इसके लिए मेरा जो सहयोग अपेक्षित होगा मैं अवश्य करूँगा। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने रोहतक व हरियाणा को अपना कार्यक्षेत्र इसलिए बनाया क्योंकि यह भूमि चौधरी छोटूराम, लाला लाजपतराय व चौधरी मातूराम, भगतफूल सिंह, स्वामी भीष्म, स्वामी ओमानंद, चौ. पीरु सिंह की कर्मभूमि रही है। स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी को एक युग प्रवर्तक के रूप में याद किया जाएगा।

हरियाणा के पूर्व मंत्री चौधरी हरिसिंह सैनी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी इंद्रवेश जी से कुछ मठाधीश इसलिए डरते थे क्योंकि उनका तेजस्वी नेतृत्व युवाओं को अपनी ओर खींच रहा था। कांग्रेस के युवा नेता श्री चक्रवर्ती शर्मा जी ने स्वामी जी को एक प्रतिभावान बुद्धिजीवी तथा कर्मयोगी बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी से उनका परिचय 1973 में हुआ था। वे विश्व की एक महान विभूति थे।

पूर्व मंत्री आनंद सिंह दांगी ने कहा कि मेरे कष्ट के दिनों में स्वामी अग्निवेश जी ने मुझे आश्रय दिया। पूर्व विधायक कृष्ण मूर्ति हुड्डा ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी को विचारधारा विशेष के लोगों ने हमेशा टारगेट किया। पूर्व मंत्री सुभाष बत्रा ने कहा कि हमे उनके आंदोलन प्रेरणा देते थे।पूर्व विधायक संतकुमार ने कहा कि हम एक साथ विधायक रहे। उन जैसा साहसी व्यक्ति मैनें नही देखा। राजनीति में रहे लेकिन कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नही किया। चौधरी रघबीर सिंह कादियान ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी इंद्रवेश जी ने किसान आंदोलन शुरू किया तथा गेहूं का भाव 78 रुपए से बढ़वाकर 105 रुपये करवाया था। आज उनके इसी आंदोलन को आगे बढ़ाने की जरूरत है।

रोहतक के विधायक भारत भूषण बत्रा ने कहा कि उन्होंने रोहतक की भूमि पर संन्यास लेकर दुनिया में हरियाणा व भारत का नाम रोशन किया। मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। नशाबंदी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि आर्य समाज मे संघर्षों का एक युग समाप्त हो गया है। उन्होंने आर्य समाज के आंदोलनकारी स्वरूप को देश दुनिया के सामने रखा। इस अवसर पर श्री बिरजानन्द एडवोकेट, नाड़ी वैद्य श्री सत्यप्रकाश आर्य, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने बताया कि हमारा बेटी बचाओ अभियान स्वामी अग्निवेश जी के 2005 के जन जागरण का परिणाम है। श्री सहदेव बेधड़क ने कहा कि मेरे शेष पृष्ठ 13 पर

पिछले पृष्ठ का शेष

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया

दादाजी चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क जी ने स्वामी जी द्वारा बनाई आर्य सभा के लिये कार्य किया।

डॉ. नरेन्द्र कुमार मग्गू पूर्व अध्यक्ष आर्थो विभाग, पी.जी.आई. रोहतक ने बताया कि मैं बचपन से ही स्वामी अग्निवेश को जानता था और उनके साथ मुझे कार्य करने का मौका मिला यह मेरा सौभाग्य रहा। स्वामी अग्निवेश जी ने अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित किया हुआ था।

इस अवसर पर स्वामी नित्यानंद, स्वामी सच्चिदानंद, आचार्य हरिदत्त, डॉ. बलबीर आचार्य, श्री हवा सिंह हुड्डा, डॉ. प्रकाशवीर दलाल, श्री वेद प्रकाश आर्य आदि ने भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

मंच का संचालन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। शांति यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. श्यामदेव आचार्य रहे। डॉ. रणबीर खासा मुख्य यज्ञमान रहे। शांति पाठ के साथ श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

श्रद्धांजलि सभा में श्री सज्जन राठी, श्री हरपाल आर्य, श्री प्रदीप कुमार, श्री अशोक आर्य, श्री अजीतपाल, श्री विवेकानंद शास्त्री, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री अजयपाल आर्य, श्री वीरेंद्र आर्य, श्री राजबीर वशिष्ठ, श्री दलवीर सिंह, श्री जयवीर सोनी, श्री बलवन्त सिंह आर्य हिसार, डॉ. शीशराम आर्य महम, श्री धर्मवीर सरपंच जीन्द, श्री सत्यवीर आर्य कैथल, प्रिं. आजाद सिंह, श्री बलराम आर्य, श्री नरेश कौशिक, श्रीमती सुनीता बांगड़ सोनीपत, श्री पवन आर्य आहुलाना, श्री नफे सिंह आर्य, श्री राजेश आर्य, श्री सत्यवीर आर्य फरमाणा, श्री धर्मवीर आर्य खरखड़ा, श्री धर्मवीर आर्य गुमाना, मा. प्रताप सिंह आर्य मकड़ौली कलां, श्रीमती मूर्ति देवी आर्य रोहतक, प्रिं. महेन्द्र सिंह शास्त्री खरकड़ा, श्री राजेंद्र सिंह आर्य लाढ़ौत, योगाचार्य श्री धर्मदेव आर्य रोहतक, योगाचार्य श्री रमेश झज्जर सहित अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

प्रभात कुमार रॉय

स्वामी अग्निवेश जी का जीवन संग्राम

– प्रभात कुमार राय

भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में गौरवशाली और शानदार किरदार निभाने वाले आर्य समाज आन्दोलन के क्षितिज पर सन् 1970 में एक जाज्वल्यमान सितारे का उदय हुआ था। जिसको स्वामी अग्निवेश के नाम से दुनिया में पहचाना गया। विश्व पटल पर स्वामी अग्निवेश को लाखों बंधुआ मजदूरों का मुक्तिदाता, नोबेल सम्मान से अलंकृत, बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता, हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पैरोकार, धार्मिक कट्टरता के मुखर विरोधी और समाजवादी सिद्धान्तों के प्रबल हिमायती के तौर पर जाना पहचाना जाता है। अग्निवेश के बहुआयामी व्यक्तित्व में गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना, समाज सुधार की तीव्र ललक, समाजवादी राजनीतिज्ञ का आक्रोश एक साथ समाहित बना रहा। आर्य समाज के प्रांगण में लाला हरदयाल, करतार सिंह सराभा, लाला लाजपत राय, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह सरीखे अनेक क्रांतिकारी किरदार पल्लवित और प्रशिक्षित हुए थे।

सेंट जेवियर कॉलेज कोलकाता में कानून की तालीम हासिल करने वाला श्याम के. राव नाम का एक नौजवान आर्य समाज की महान क्रांतिकारी विचार परम्परा से अत्यन्त प्रभावित हो गया। सदैव कोलकाता विश्वविद्यालय में टॉप करने वाला श्याम के. राव बाद में सेंट जेवियर कॉलेज में कानून का प्रोफेसर नियुक्त हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन में ही श्याम के. राव आर्य समाज का संन्यासी बन जाने का संकल्प संजो चुका था। 1970 में सेंट जेवेयिर कॉलेज से त्याग पत्र देकर श्याम के. राव ने पंजाब विश्वविद्यालय के एक अन्य प्रोफेसर के साथ रोहतक में बाकायदा आर्य संन्यासी की दीक्षा ग्रहण की और दोनों संन्यासियों को आर्य समाज द्वारा क्रमशः अग्निवेश और इन्द्रवेश के नाम प्रदान किये गये।

स्वामी अग्निवेश द्वारा हरियाणा प्रान्त को अपना प्रारम्भिक कार्य क्षेत्र बनाया गया। हरियाणा के किसान आन्दोलनों में नेतृत्वकारी शिरकत करने के कारण अग्निवेश को अनेक दफा जेल यात्राएं करनी पड़ी। जे.पी. आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण आपातकाल में हुकुमत द्वारा वारण्ट निकाला गया। 9 महीनों की फरारी के पश्चात् अग्निवेश को गिरफ्तार कर लिया गया और आपातकाल के शेष 10 महीने जेल में बिताये। जे.पी. आन्दोलन में सक्रिय शिरकत करने से हासिल हुई शोहरत में 1977 में अग्निवेश को विधायक और फिर हरियाणा का शिक्षामंत्री बना दिया। 1978 में जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर द्वारा अग्निवेश को जनता पार्टी का महासचिव नियुक्त कर दिया गया। 1980 में हरियाणा की पत्थर खदान मजदूरों के आन्दोलन पर पुलिस फायरिंग के विरोध में अग्निवेश ने मंत्री पद से त्याग पत्र देकर बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान संचालित करने का आगाज किया और बंधुआ मुक्ति मोर्चा की बुनियाद रखी।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के तहत संचालित देशव्यापी अभियान ने अग्निवेश को विश्वव्यापी ख्याति और सम्मान प्रदान किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अग्निवेश को एंटीग्लेवरी कमीशन का चेयरमैंन नियुक्त किया गया। विश्व पटल पर नोबेल प्राइज के समकक्ष करार दिये जाने वाले लिवलीहुड प्राइज से स्वामी अग्निवेश को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि अग्निवेश के अतिरिक्त केवल दो भारतीयों क्रमशः मेधा पाटेकर और असगर अली इंजीनियर को लिवलीहुड प्राइज से नवाजा गया है। बंधुआ मुक्ति मोर्चा की अथक कोशिशों से संसद द्वारा बंधुआ विरोधी एक्ट पारित किया गया। जिसके तहत बंधुआ मजदूरी कराने के मुजरिमों को कड़ी सज़ा का प्रावधान किया गया।

> भले ही स्वामी अग्निवेश ने इस नश्वर संसार को अलविदा कह दिया है, किन्तु उनका प्रखर समाजवादी नजरिया उनकी असीम वीरता, मेहनतकश किसान मजदूरों के प्रति उनका गहन अनुराग धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक एकता के लिए उनके अथक प्रयास भारत के जनमानस को एक समाजवादी भारत का सृजन करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

हिन्दू–मुस्लिम एकता और भाईचारे के लिए सदैव प्रयासरत रहे समाजवादी नजरिये के स्वामी अग्निवेश द्वारा 1987 में अन्जाम दिये गये मेरठ दंगे के पश्चात् दिल्ली से मेरठ तक अभिनेत्री शवाना आजमी, मजदूर नेता शंकर गुआनियोगी, अकाली नेता जीवन सिंह उमरानंगल, असगर अली इंजीनियर, फिल्म लेखक गीतकार जावेद अख्तर, साहित्यकार विष्णु प्रभाकर, निशान्त नाट्य संघ के प्रोफेसर शमशुल इस्लाम आदि 100 से अधिक विशिष्ट साथियों को साथ लेकर शांति मार्च अंजाम दिया गया। 2002 में गुजरात में अंजाम दिये गये प्रान्त व्यापी विकराल साम्प्रदायिक दंगों के बाद अग्निवेश द्वारा अनेक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ सम्पूर्ण गुजरात में शांति मार्च आयोजित किया गया। देश भर के किसान आन्दोलनों में स्वामी अग्निवेश की जबरदस्त शिरकत जीवन पर्यन्त कायम बनी रही। 1990 के दशक में जन्तर–मन्तर स्थित स्वामी अग्निवेश के कार्यालय में प्रायः देश के कोने–कोने से पधारे किसान नेताओं का जमावड़ा बना रहता था। 1987 में राजस्थान में राजकुंवर नामक महिला को जिन्दा जलाकर सती कर दिया गया था। सती प्रथा के विरुद्ध अग्निवेश के नेतृत्व में आर्य समाज द्वारा एक कामयाब अभियान संचालित किया गया और फलस्वरूप संसद द्वारा सती प्रथा के विषय में कड़े कानून का एक विधेयक पारित किया गया। 1988 में उदयपुर के नाथद्वारा मंदिर में दलितों के प्रवेश को लेकर अग्निवेश की कयादत में आर्य समाज द्वारा एक जबरदस्त सफल आन्दोलन किया गया। इस आन्दोलन में स्वामी अग्निवेश के निकट सहयोगी कैलाश सत्यार्थी पर नाथद्वारा मंदिर के पण्डे पुजारियों द्वारा कातिलाना हमला किया गया। इस हमले में कैलाश सत्यार्थी की जिन्दगी किसी तरह से बच गई।

क्रांतिकारी तकरीरों के लिए प्रख्यात रहे स्वामी अग्निवेश के साम्प्रदायिकता विरोधी विचारों और व्याख्यानों में निहित समाजवादी प्रखरता से कट्टरपंथी हिन्दू संगठन प्रायः उनसे नाराज ही बने रहे। अग्निवेश के जीवनकाल में अनेक दफा उन पर कातिलाना हमले किये गये। दो वर्ष पूर्व झारखण्ड के पाकुड़ में एक कट्टरपंथियों के गुट द्वारा अग्निवेश पर एक कातिलाना हमला किया गया। जबकि वह आदिवासी किसानों की एक मीटिंग को सम्बोधित करने जा रहे थे। यह हमला वस्तुतः कट्टरपंथियों द्वारा मॉवलिंचिंग के अंदाज में अंजाम दिया गया। इस कातिलाना हमले में स्वामी अग्निवेश के लिवर में एक गंभीर घाव हो गया था। इसी जख्म के परिणामस्वरूप लंबी तिमारदारी के बावजूद भी उनके जीवन को बचाया नहीं जा सका। निजी बातचीत में अग्निवेश प्रायः कहा करते थे कि साम्प्रदायिक कट्टरपंथी गणेशंकर विद्यार्थी और महात्मा गांधी की तरह उनकी हत्या तो कर सकते हैं किन्तु जीते जी उनको साम्प्रदायिकता के विरुद्ध संग्राम करने से कदापि खौफजदा नहीं कर सकते।

भले ही स्वामी अग्निवेश ने इस नश्वर संसार को अलविदा कह दिया है, किन्तु उनका प्रखर समाजवादी नजरिया उनकी असीम वीरता, मेहनतकश किसान मजदूरों के प्रति उनका गहन अनुराग धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक एकता के लिए उनके अथक प्रयास भारत के जनमानस को एक समाजवादी भारत का सृजन करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

क्रांतिकारी सामाजिक कार्यकर्ता, साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रणेता, निडर ओजस्वी वक्ता, समतामूलक समाज के पक्षधर तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी

स्वामी अग्निवेश जी को प्रेरणा सभा आयोजित कर अर्पित किये गये श्रद्धा सुमन

सारे भेदभाव मिटाकर एकजुट होकर महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने का संकल्प ही

स्वामी अग्निवेश जी को होगी सच्ची श्रद्धांजलि

– स्वामी आर्यवेश

समतामूलक समाज के पक्षधर, समाज के अन्तिम व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए संघर्षरत, महिलाओं की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए निरन्तर प्रयासरत, निर्भीक वक्ता, रुढ़िवादिता और जातिवाद के विरुद्ध अपनी सशक्त आवाज उठाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में दिनांक 21 सितम्बर, 2020 को गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विदित हो कि 21 सितम्बर विश्व शांति दिवस पर स्वामी अग्निवेश जी का जन्मदिवस भी है। इस दिन वे किसी न किसी सामाजिक मुद्दे को उठाकर अपना जन्म दिवस मनाया करते थे। लेकिन आज उनका जन्म दिवस उन्हीं की श्रद्धांजलि सभा के रूप में मनाया जा रहा है। इस श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संयुक्त तत्वावधान में प्रेरणा सभा के रूप में किया गया। कार्यक्रम का संचालन सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री और बंधुआ मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ पदाधिकारी प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया। गुरुकुल गौतमनगर के सभाकक्ष में स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए कोरोना संक्रमण काल होते हुए भी भारी संख्या में गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

इस अवसर पर देश तथा विदेश के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं, विश्व स्तरीय नेताओं तथा अनेक गणमान्य महानुभावों के द्वारा भेजे गये वीडियो संदेश का प्रसारण भी किया गया। कार्यक्रम के संचालक प्रो. विट्ठलराव आर्य ने भारी संख्या में प्राप्त शोक संदेशों का विवरण भी दिया।

प्रेरणा सभा में कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. योगानन्द शास्त्री पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली, दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., श्री हवा सिंह हुड्डा, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, स्वामी वेदात्मवेश जी, श्री प्रेमपाल शास्त्री जी, श्री हरदेव आर्य (राजस्थान), श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री बलजीत सिंह आदित्य दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, श्री मनु सिंह, साध्वी अग्न्यानन्दी जी, श्री गौतम कुमार विग, श्री विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. श्यामदेव जी, आचार्य सत्यव्रत जी, मौलाना शाहीन कासमी, भाई दिलीप सिंह आदि के अतिरिक्त श्री निर्मल अग्नि (महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा) श्री रमेश आर्य, श्री विष्णुपाल, श्री जावेद, श्री अशोक कुमार वशिष्ठ, श्री सोनू, श्री संतोष तथा समस्त कर्मचारीगण बंधुआ मुक्ति मोर्चा सहित अनेक संन्यासीगण, सामाजिक कार्यकर्ता तथा धर्मगुरुओं की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी धाराप्रवाह शैली में अपने उद्गार प्रकट करते हुए अपने संस्मरणों के साथ–साथ स्वामी अग्निवेश जी के जीवन के वे ऐतिहासिक पल साझा किये जिनसे आम जनता अनजान थी। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि एक संभ्रान्त और धनाढ्य परिवार से निकले स्वामी अग्निवेश जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और एक अत्यन्त प्रतिष्ठित नौकरी को छोड़कर भरी जवानी में संन्यास ग्रहण कर गरीब किसानों, बंधुआ मजदूरों, दबे कुचले, पिछड़े लोगों की आवाज बनने के लिए कार्य क्षेत्र में कूद पड़े। जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से नष्ट करने के लिए उन्होंने संकल्प लिये। इन कार्यों को पूर्ण करने के लिए इनके प्रेरणास्रोत बने स्वामी इन्द्रवेश जी। एक प्राचीन गुरुकुल परम्परा में पढ़ा–लिखा स्नातक, वेदों का विद्वान और दूसरा अंग्रेजी शिक्षा से निकला हुआ उच्चकोटि का शिक्षित प्रोफेसर। प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृति के मिलन ने भारत में आर्य राष्ट्र की स्थापना का संकल्प लिया। वे चाहते थे कि जैसे दो भाई प्रेम से रहते हैं वैसे ही देश में सब लोग प्रेम और सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहें। उन्होंने धार्मिक सौहार्द को बनाये रखने के लिए अभूतपूर्व कार्य किये तथा यही उनकी मुख्य विचारधारा थी। इस प्रकार की विचारधारा को लेकर वे आगे बढ़े। दोनों महान आत्माओं ने आर्य सभा की स्थापना की और आर्य राष्ट्र की कल्पना को साकार करने के लिए पहला कदम बढ़ाया। उन्होंने हरियाणा में चुनाव लड़ा। स्वामी अग्निवेश जी चुनाव जीतकर हरियाणा सरकार में शिक्षामंत्री बने। लेकिन फरीदाबाद के मजदूरों पर पुलिस द्वारा गोली चलाने से हुई 10 मजदूरों की मौत के विरोध में उन्होंने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। ऐसे उदाहरण कम ही देखने को मिलते हैं। तत्पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा की स्थापना की और लाखों बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी विलक्षण मेधा और तेजस्वी व्यक्तित्व से मंडित एक योद्धा थे। वे वाणी और लेखनी के धनी तथा हिन्दी, अंग्रेजी सहित कई अन्य भाषाओं में पारंगत थे। उनकी वक्तृत्व शक्ति इतनी तीव्र थी कि वे हर व्यक्ति को अपने तर्कों और विद्वता से प्रभावित कर लेते थे। स्वामी अग्निवेश जी देश तथा विदेश में समान रूप से लोकप्रिय नेता थे और देखा जाये तो उन्होंने मानवतावाद, साम्प्रदायिक सौहार्द, बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के जो कार्य

पिछले पृष्ठ का शेष

स्वामी अग्निवेश जी को प्रेरणा सभा आयोजित कर अर्पित किये गये श्रद्धा सुमन

किये उससे विदेशों में उन्हें भरपूर लोकप्रियता मिली। यहाँ के लोगों की अपेक्षा उन्हें बाहर के लोगों और अन्य धर्मों के व्यक्तियों ने ज्यादा सराहा। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि स्वामी अग्निवेश जी को कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया गया। वे एक प्रयोगधर्मी नेता थे और समूची मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहे। जब अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जार्ज बुश भारत आये थे तो उन्होंने भारतीय धर्मगुरुओं के साथ एक गोष्ठी की जिसमें स्वामी अग्निवेश जी भी थे। सभी धर्माचार्यों को 2 मिनट का समय दिया गया था लेकिन स्वामी अग्निवेश जी ने 7 मिनट तक अपने विचारों और व्यवहार से राष्ट्रपति बुश को गहरे तक प्रभावित किया तथा चारों वेदों का एक सैट उन्हें प्रदान किया। स्वामी अग्निवेश जी के विचारों से प्रभावित होकर जार्ज बुश ने अपने राजदूत को 7, जन्तर मन्तर रोड कार्यालय में भेजा तथा उसने विशेष धन्यवाद पत्र स्वामी जी को प्रदान किया। स्वामी जी ने वेदानुकूल आचरण से वेदों के सामर्थ्य और प्रमाण विश्व के सामने रखे।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने आध्यात्मिक साधना, सेवा प्रकल्पों, मानवीय संवेदनाओं और आचरण पर बल देते हुए अपने मिशन को आगे बढ़ाया। स्वामी जी ने कहा कि अपनी इसी विशिष्ट शैली में कार्य करने के कारण स्वामी अग्निवेश जी को 1990 में दासता विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड (लंदन), स्वतंत्रता एवं मानवाधिकार अवार्ड (1994, स्विटजरलैंड), राजीव गांधी सद्भावना अवार्ड (नई दिल्ली, 2004) और राईटलाइवली हुड अवार्ड (स्विडन, 2004) जो नोबेल पुरस्कार के समकक्ष है से पुरस्कृत किया जा चुका है। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि स्वामी अग्निवेश जी का मानना था कि धर्म का जो विकृत स्वरूप आज हमें दिखाई दे रहा है, जिसके नाम पर समूचे विश्व में पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम और आतंकवाद पैर पसार रहा है मैं उसे धर्म नहीं मानता। जो धर्म मानवीय मूल्यों अर्थात् संवेदना, करुणा, अहिंसा, प्रेम, सद्भावना, भ्रातृत्व, कल्याण, शांति को प्राथमिकता देता है वही असल में धर्म है। उनका मानना था कि मानवीय मूल्यों का उद्गम स्रोत वेद हैं और वेद का ज्ञान ही सब ज्ञान–विज्ञान का मूल है। अतः वेदों की ओर लौटने का संदेश उन्होंने विश्व तक पहुँचाया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि उन्होंने बेटियों की घटती हुई संख्या की गम्भीरता को देखते हुए कन्या भ्रूण हत्या का मुद्दा इतने सशक्त ढंग से उठाया कि आज यह जन–जन का मुद्दा बन गया है। स्वामी अग्निवेश जी ने 2005 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म स्थान टंकारा से अमृतसर तक 15 दिन की 'सर्वधर्म जन–चेतना' यात्रा निकाली और वह जिस प्रकार सफल रही तथा उसका व्यापक असर आम नागरिक के जीवन पर पड़ा उससे स्वामी अग्निवेश जी का कद अत्यन्त विराट हो गया। आज कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जो कानून बना है और सजा का प्रावधान है यह स्वामी अग्निवेश जी की कार्यक्षमता तथा आन्दोलन के प्रभाव का परिणाम है। यद्यपि यह कानून कोई विशेष कारगर नहीं है। इसमें संशोधन की विशेष आवश्यकता है। सती प्रथा के विरुद्ध स्वामी अग्निवेश जी ने दिल्ली से राजस्थान के देवराला तक पदयात्रा निकालकर तथा आन्दोलन के माध्यम से केन्द्र तथा राज्य सरकार को झकझोर कर रख दिया था, जिसके परिणामस्वरूप केन्द्र में तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने सती प्रथा के विरुद्ध सख्त कानून बनाया। नाथद्वारा मंदिर में हरिजनों के मंदिर प्रवेश का आन्दोलन चलाया जहाँ हजारों लोग उनके विरोध में खड़े हो गये, लेकिन स्वामी अग्निवेश जी चट्टान की तरह अड़े रहे और उन्होंने इस आन्दोलन में भी सफलता पाई। हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जिसके परिणामस्वरूप हरियाणा में शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया। ऐसी न जाने कितनी स्मृतियाँ स्वामी अग्निवेश जी से जुड़ी हुई हैं जिनका संक्षिप्त में वर्णन करना मुश्किल है। वे एक अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व और कृतित्व वाली प्रतिभावान पुण्यात्मा थे। अपने मिशन के प्रति निष्ठा और समर्पण की उनमें अद्भुत सामर्थ्य थी। उनकी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सक्रिय होकर कार्य करने की गति अत्यन्त प्रशंसनीय रही। स्वामी आर्यवेश जी ने एक सच्ची घटना का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि सउदी अरब में जहाँ सत्यार्थप्रकाश रखने पर राम कुमार नाम के एक भारतीय नागरिक को मृत्युदण्ड की सजा सुना दी गई थी जिसे बाद में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के हस्तक्षेप से छुड़वाकर भारत लाया गया था। वहीं के राजा किंग अब्दुल्ला को 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट करना उनके साहस तथा गरिमा का एक अद्वितीय उदाहरण है। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एक प्रकल्प (समकालीन दासता विरोधी ट्रस्ट फण्ड) का स्वामी जी को 9 वर्ष तक अध्यक्ष चुना गया। इस ट्रस्ट फण्ड के माध्यम से स्वामी जी ने दुनिया के विभिन्न देशों में चल रही दासता, बंधुआ मजदूरी व शोषण को समाप्त करने के लिए करोड़ों रुपये का सहयोग वहाँ के जन संगठनों को और दासता की बेड़ियों में जकड़े शोषित, वंचित, पीड़ित लोगों को उपलब्ध कराया। ऐसे विश्व स्तरीय संस्थान का लगातार सर्वसम्मति से 9 वर्ष तक अध्यक्ष बने रहना वास्तव में स्वामी अग्निवेश जी के सेवा कार्यों तथा चमत्कारी व्यक्तित्व को दर्शाता है।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सरीखे महापुरुष को सच्ची श्रद्धांजलि का स्वरूप यही हो सकता है कि हम अपने समय की समस्याओं और अन्य ज्वलन्त मुद्दों का समाधान उसी तन्मयता और समर्पित भावना से करें जिसका उदाहरण स्वामी अग्निवेश जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में प्रस्तुत किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि दिल को दिल से जोड़कर सभी मतभेद समाप्त करके एकजुट होकर महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने का एक नया यज्ञ शुरू करें। हमारे सामने बड़ी–बड़ी चुनौतियाँ हैं अपनी कमियों को दूर कर हम सब मिलकर इन चुनौतियों का सामना करें और आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करें। हमारे प्रेरणास्रोत दिवंगत आर्य नेता, आर्य संन्यासी स्वामी

स्मृति शेष स्वामी अग्निवेश जी के सम्मान में विश्व स्तरीय नेताओं तथा गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भारी संख्या में प्राप्त हुए वीडियो संदेश तथा शोक संदेश

स्वामी अग्निवेश जी के देहान्त का समाचार दावानल की तरह सारे विश्व में फैल गया। विश्व प्रसिद्ध सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों, विश्व के प्रतिष्ठित वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं, आर्य समाज के मनीषी विद्वानों, बुद्धिजीवियों, नेताओं तथा मनस्वी संन्यासियों में आश्चर्य मिश्रित शोक की लहर दौड़ गई। सारे विश्व से भारी संख्या में वीडियो संदेश तथा शोक संदेश प्राप्त हो रहे हैं। स्थानाभाव के कारण पूरे संदेश प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। यहाँ केवल नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं। स्वामी अग्निवेश जी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए इन विश्व प्रसिद्ध नेताओं ने उन्हें दबे–कुचले लोगों का मसीहा, क्रांतिकारी सामाजिक कार्यकर्ता, साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रणेता, सामाजिक न्याय के लिए निरन्तर संघर्षरत, जुझारू नेता, निडर ओजस्वी वक्ता, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, कई भाषाओं के ज्ञाता, विश्व के राजनीतिक नेताओं तक भारतीय संस्कृति को पहुँचाने वाले मानवाधिकार के पुरोधा, अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित तथा अनेकों आन्दोलनों का प्रणेता बताया। जिन विश्व प्रसिद्ध संस्थाओं तथा गणमान्य व्यक्तियों ने वीडियो संदेश तथा शोक संदेश भेजे हैं वे निम्नलिखित हैं।

प्रो. सुदर्शन जगेसर (आर्य समाज, मॉरीशस), सुनीता विश्वनाथ (सामाजिक कार्यकर्ता, न्यूयॉर्क), प्रो. कैथरीन मार्शल (सोशल एक्टिविस्ट) वासिंगटन डी.सी., जेरॉर्ज आर्म स्ट्रॉन्ग (सोशल एक्टिविस्ट) ऑकलैंड, न्यूजीलैंड, आर्डी हल्सबरगन (अग्नि फाउंडेशन, नीदरलैंड), फादर फेलिक्स राज (कुलपति, सेंट जेवियर्स यूनिवर्सिटी, कोलकाता, डॉ. अली मर्चेंट (धार्मिक नेता, बहाई मत), डॉ. बाबूराम भट्टराई (पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल), आचार्य विवेक मुनि (जैन मत), ऑगस्टाईन वेल्थ (सोशल एक्टिविस्ट), प्रो. अकबर अहमद, (पूर्व राजदूत अमेरिकन विश्वविद्यालय), वाशिंगटन डी.सी. श्री सुभाष लोमटे जी (सामाजिक कार्यकर्ता), डॉ. रमामणि (सामाजिक कार्यकर्ता, जेनेवा), श्रीमती अमरजीत कौर (महासचिव, अखिल भारतीय व्यापार संघ), डॉ. बिसराम रामबिलास (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका), स्वामी वेदानन्द (धर्माचार्य, आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका), तिब्बतियन धार्मिक नेता श्री दलाई लामा, डॉ. शिव सरीन (आई.एल.बी.एस. अस्पताल के प्रमुख), श्री श्री रविशंकर जी (संस्थापक आर्ट ऑफ लिविंग) डॉ. वाल्सन थम्पू, (सेवानिवृत्त प्रिंसिपल सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली), श्री राजीव सेठी जी (कलाकार), गेराल्ड डाली (यूएन रेजिडेंट को–ऑर्डिनेटर, थिंपू, भूटान), श्री पी. वी. राजगोपाल (सामाजिक कार्यकर्ता, एकता परिषद), डॉ. डोमिनिक इमैनुएल (धार्मिक नेता, क्रिश्चियनिटी, वियना), श्रीमती अरुणा रॉय (सोशल एक्टिविस्ट आर.टी.आई.), श्रीमती तीस्ता शीतलवाड़ (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री निखिल डे (सामाजिक कार्यकर्ता), मौलाना ए.आर. साहीन कासमी (महासचिव, विश्व शांति संगठन, दिल्ली), प्रो. राजेश चक्रवर्ती (जिंदल ग्लोबल बिजनेस स्कूल, जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी), श्री विमल भाई, श्री विक्रम सिंह, डॉ. मधुमिता जी, श्री दिनेश अमन (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री अलेक्जेंडर जी (सामाजिक कार्यकर्ता, जेनेवा), श्री कैलाश सत्यार्थी (नोबेल पुरस्कार से सम्मानित), कोलिन गोंसालवेस, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, श्री अनिल कुट्टू, आर्च विशप (दिल्ली), डॉ. अली मर्चेन्ट बहाई धर्मगुरु, इजात मलेकर यहूदी धर्मगुरु, सुश्री मेधा पाटेकर, श्री दीपांकर भट्टाचार्य, मो. सलीम इंजीनियर उपप्रधान जमाते इस्लामी हिन्द, श्री राहुल वी. कराड कार्यकारी प्रधान एम.आई.टी. पूना महाराष्ट्र।

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री वेंकया नायडू, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी, श्रीमती सोनिया गाँधी कांग्रेस अध्यक्ष, श्री राहुल गांधी संसद सदस्य, श्री हरदीप पुरी केन्द्रीय मंत्री, श्री नीतिश कुमार जी मुख्यमंत्री बिहार, पीनाराई विजयन जी मुख्यमंत्री केरल, श्री अशोक गहलोत जी मुख्यमंत्री राजस्थान, ममता बनर्जी मुख्यमंत्री पश्चिम बंगाल, श्री हेमन्त सोरेन मुख्यमंत्री झारखण्ड, श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़, श्री अमरेन्दर सिंह मुख्यमंत्री पंजाब, श्री चन्द्रशेखर राव मुख्यमंत्री तेलंगाना, श्री अभय सिंह चौटाला, श्री बण्डारु दत्तात्रेय राज्यपाल हिमाचल प्रदेश, श्री योगेन्द्र यादव (स्वराज आन्दोलन), इतिहासकार श्री रामचन्द्र गुहा, श्री सीताराम येचुरी सचिव सी.पी.एन., श्री राज बब्बर जी, श्री तोताराम भील प्रधान आदिवासी विकास परिषद्, श्री हंसराज भारतीय संयोजक सन्त पीरूशाह मानव सेवा संस्थान, श्री शशि थरूर पूर्व केन्द्रीय मंत्री, श्री प्रशान्त भूषण सीनियर एडवोकेट, श्री अजीत सिंह पूर्व विधायक झज्जर हरियाणा, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, स्वामी विवेकानन्द जी महाराज गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ, श्री हिमांशु सिंह, श्री दीपक कथूरिया, श्री आर.डी. यादव महामंत्री एच.एम.एस. हरियाणा, श्री रामशरन जोशी वरिष्ठ पत्रकार, श्री महेन्द्र पाल आर्य रूद्रपुर, श्री आरिश खुदाई खिदमदगार, आचार्य सुनील वधावन, श्री भूपेन्द्र रावत, श्री हर्षमन्दर, श्री मदन मोहन शर्मा, श्री विजय प्रताप समाजवादी समागम, टीम एस.डी.पी.आई दिल्ली, श्रीमती मधु जोशी, श्री रवि नितेश निर्मला देशपांडे संस्थान, श्री राम मोहन राय महासचिव गांधी ग्लोबल फेमिली, पुष्पा जी, श्री प्रकाश वीर शास्त्री आर्य समाज नौरोजी नगर, श्री मनोहर मानव सामाजिक कार्यकर्ता, श्री मदन मोहन शर्मा, महमूद प्राचा, वरिष्ठ अधिवक्ता, हेनरी तिफांगे, सहनिदेशक पीपल वॉच तमिलनाडू। श्री प्रभाशंकर तिवारी आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, आर्य समाज महाराजपुर, छतरपुर (मध्य प्रदेश), आर्य समाज गुलावठी बुलन्दशहर, प्रधानाचार्य, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज गुलावठी, बुलन्दशहर, प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्य, शिक्षक तथा अन्य कर्मचारीगण देवानागरी इण्टर कॉलेज गुलावठी, बुलन्दशहर, प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्य तथा अन्य कर्मचारी डी.एन.पी.जी. कॉलेज गुलावठी, बुलन्दशहर, श्रीमती इन्दू पुरी देवीदास केवलकृष्ण चेरीटेबल ट्रस्ट मोंगा, पंजाब सहित देश के विभिन्न भागों से भारी संख्या में शोक संदेश प्राप्त हुए हैं।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पिछले पृष्ठ का शेष

स्वामी अग्निवेश जी को प्रेरणा सभा आयोजित कर अर्पित किये गये श्रद्धा सुमन

अग्निवेश जी के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रेरणा सभा का संचालन करते हुए बीच–बीच में सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य स्वामी अग्निवेश जी से जुड़ी अनेक यादों का ब्यौरा देते रहे। स्वामी अग्निवेश अमर रहें के नारों के बीच उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी जनता की आवाज उठाने के लिए हमेशा आगे रहते थे। उन्होंने सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध निरन्तर आवाज उठाई। वे दबे–कुचले, निर्धन, असहाय व्यक्तियों की आवाज थे। जहाँ कहीं भी उन्हें लगता था कि यहां अत्याचार हो रहा है स्वामी अग्निवेश जी वहां उपस्थित रहते थे और अपनी इसी विशेषता के कारण उन पर कई बार प्राणघातक हमला भी हुआ। वे इन्सानियत के सच्चे प्रवक्ता थे और बिना किसी भेदभाव के सबके साथ खड़े होना उनकी मुख्य विशेषता थी। वे सच्चे कर्मयोगी थे।

अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए श्री प्रेमपाल शास्त्री जी ने कहा कि व्यक्ति के जाने के बाद उसके गुणों का पता चलता है। स्वामी अग्निवेश जी ने युवा शक्ति को आगे बढ़ाने के साथ–साथ सामाजिक मुद्दों को भी जोर–शोर से उठाने का कार्य किया। उनके विचार पूरी मानव जाति के लिए प्रेरणा का कार्य करते रहेंगे। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके विचारों को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करें। मैं अपनी तरफ से तथा आर्य पुरोहित सभा की तरफ से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने कहा कि अपने प्रखर व्यक्तित्व और बहुआयामी कृतित्व से अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले स्वामी अग्निवेश जी संघर्ष के पर्याय रहे। विचारों, योजनाओं, संकल्पों, प्रेरणाओं, आन्दोलनों से भरपूर उनका जीवन उनके हृदय की विशालता और उदारता का परिचय देता है। साधना, श्रम, सर्जना में वे बेजोड़ थे। उनके जैसे कर्मयोगी बहुत कम देखने को मिलते हैं। उन्होंने अपनी मंजिल खुद तलाशी और अपने पैरों पर चलकर तय की। स्वामी अग्निवेश जी ने विदेशों में वैदिक धर्म की पताका फहराकर सही मायने में कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को साकार किया। अपने संस्मरणों को साझा करते हुए शास्त्री जी ने कहा कि वे जो ठान लेते थे उसे पूरा करते थे। उन्होंने अन्तर्रात्मा की अनन्त गहराईयों से स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने अपनी विशिष्ट शैली में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी अतुल्य हैं, उनकी कोई तुलना नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि अपने कार्यों से, अपने जीवन से उन्होंने जो सुगन्ध बिखेरी वह सदा रहने वाली है। चरैवेति–चरैवेति यही उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने पूरे विश्व में घूम–घूमकर वैदिक धर्म को आगे बढ़ाया। विधर्मियों में जाकर वे वैदिक धर्म की बात करते थे और लोग उनसे अत्यधिक प्रभावित होते थे। मेरा उनके चरणों में विनम्र नमन।

डॉ. आनन्द कुमार जी पूर्व आई.पी.एस. ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका मुख्य संकल्प आर्य राष्ट्र का निर्माण करना था और आज इस अवसर पर हम सबको इसी बारे में चिन्तन करना चाहिए। मैं उन्हें हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सहृदय, संवेदनशील, निश्छल, निष्कपट वृत्ति के थे। विचारों का मिलना या न मिलना एक अलग बात है, लेकिन सर्व स्वीकार्य है कि स्वामी अग्निवेश जी ने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक क्षेत्र में कुछ प्रयोग किये जिसमें से कुछ सफल हुए और कुछ विफल हुए, लेकिन इतना तो हर व्यक्ति मानता है कि जो निर्भीकता, जुझारूपन और मानव मात्र के कल्याण की भावना उनके अन्दर थी वह विरले लोगों में ही होती है। वे अपने जीवन में पूर्ण उत्कर्ष तक पहुँचे। श्री विनय आर्य ने कहा कि महाशय धर्मपाल जी यहाँ आना चाहते थे लेकिन वे बुखार से ग्रस्त हैं। अतः मैं उनकी तरफ से, अपनी तरफ से और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्वामी अग्निवेश जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी यादें साझा की। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक ऐसे योद्धा थे जो सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करते रहे। वे राष्ट्र के लिए भारतीय संस्कृति के लिए, अन्याय के विरुद्ध, आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए, दबे–कुचले मजदूर वर्ग के लिए हमेशा संघर्षरत रहे। उनके संघर्ष की सैकड़ों घटनाएं हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में तथा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में लगा दिया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य तथा अनेकों गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि सामाजिक बुराईयों, जाति–पात, दहेजप्रथा, सती प्रथा, शराबबन्दी आन्दोलन, कन्या भ्रूण हत्या आन्दोलन आदि अनेकों आन्दोलनों के माध्यम से स्वामी अग्निवेश जी ने वैचारिक क्रांति पैदा की। उन्होंने भिन्न–भिन्न मुद्दों को लेकर पद यात्राएं, जन–चेतना यात्राएं, सम्मेलन आदि करके अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया। स्वामी अग्निवेश जी के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर हजारों नवयुवक उनके साथ चलने के लिए तत्पर हुए। वैदिक धर्म, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द के क्रांतिकारी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में उन्होंने बहुत पुरुषार्थ किया। आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके विचारों को जीवित रखना, उनके कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना आज हम सबका दायित्व है और यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर श्री हवा सिंह हुड्डा, साध्वी अग्न्यानन्दी जी तथा अन्य अनेक व्यक्तियों ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

स्वर्गीय स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

विश्व शांति दिवस 21 सितम्बर जो स्वामी अग्निवेश जी का जन्म दिवस भी है के संदर्भ में 22 सितंबर 2020 की शाम को जामिया नगर ओखला में वर्ल्ड पीस ऑर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली, की ओर से स्वामी अग्निवेश जी की सेवाओं और उनके जीवनी पर आधारित श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में अतिथियों का परिचय 'वर्ल्ड पीस अर्गानाइजेशन' के जनरल सेक्रेटरी मौलाना मोहम्मद एजाज उर रहमान शाहीन कासमी ने कराया और संचालन मुफ्ती अफरोज आलम कासमी ने किया। यह सभा डॉ सैयद फारूक साहब हिमालय ड्रग्स के निवास के बगल में तस्मिया हाल में आयोजित किया गया। जिसमें बहाई लोटस टेंपल से ए.के मर्चेंट इंस्टिट्यूट आफ पीस एंड हार्मनी से एम.डी. थॉमस, जमात ए इस्लामी हिंद के सेक्रेटरी जनाब इंतजार नईम साहब, स्वर्गीय स्वामी अग्निवेश के सेक्रेटरी जनाब जावेद साहब, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के पदाधिकारी निर्मल जी ,अशोक जी, रमेश जी विष्णु जी, आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रो. विट्ठलराव आर्य और सर्वधर्म सम्वाद से मनु सिंह जी, एनसीपीयूएल से मोहतरमा आबगीना, नोएडा से डाक्टर मुमुक्षु जी आर्य, मेरठ से मौलाना मसूद उर रहमान शाहीन जमाली , मदरसा तजवीदुल कुरान के संचालक कारी अब्दूल हफीज, और बड़ी संख्या में मुस्लिम व गैर मुस्लिम और मौलानागण शामिल हुए और सब ने स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि पेश की। इण्डिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर से सिराजुद्दीन कुरैशी, मिल्ली कांसिल से डाक्टर मंजूर आलम ने अपना संदेश भेजा।, स्वामी आर्यवेश किसी मजबूरी के कारण न आ सके। डॉ सैयद फारूक साहब की श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।